ƒ

विदेह मिथिला स्टूडेण्ट यूनियन (एम.एस.यू.) विशेषांक

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर

ISBN: 978-93-340-3658-9

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। कॉपीराइट (©) धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ, अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादन अथवा संचारन-प्रसारण नै कएल जा सकैत अछि।

(c) २०००- २०२३. सर्वाधिकार सुरक्षित। भालसरिक गाछ जे सन २००० सँ याहूसिटीजपर छल http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.html , http://www.geocities.com/ggajendra आदि लिंकपर आ अखनो ५ जुलाइ २००४ क पोस्ट http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html केर रूपमे इन्टरनेटपर मैथिलीक प्राचीनतम उपस्थितक रूपमे विद्यमान अछि *(किछु दिन लेल http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html लिंकपर, स्रोत wayback machine of https://web.archive.org/web/*/videha 258 capture(s) from 2004 to 2016- http://videha.com/ भालसरिक गाछ-प्रथम मैथिली ब्लॉग / मैथिली ब्लॉगक एग्रीगेटर)।*

ई मैथिलीक पहिल इंटरनेट पत्रिका थिक जकर नाम बादमे १ जनवरी २००८ सँ 'विदेह' पड़लै। इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि, जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ" जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि।

(c)२०००- २०२३. विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004). सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। Editor: Gajendra Thakur. In respect of materials e-published in Videha, the Editor, Videha holds the right to create the web archives/ theme-based web archives, right to translate/ transliterate those archives and create translated/ transliterated web-archives; and the right to e-publish/ print-publish all these archives. रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना/ संग्रह (संपूर्ण उत्तरदायित्व रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता मध्य) editorial.staff.videha@gmail.com कें मेल अटैचमेण्टक रूपमेँ पठा सकैत छथि, संगमे ओ अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो सेहो पठाबथि। एतऽ प्रकाशित रचना/ संग्रह सभक कॉपीराइट रचनाकार/ संग्रहकर्त्ताक लगमे छन्हि आ जतऽ रचनाकार/ संग्रहकर्त्ताक नाम नै अछि ततऽ ई संपादकाधीन अछि। सम्पादक: विदेह ई-प्रकाशित रचनाक वेब-आर्काइव/ थीम-आधारित वेब-आर्काइवक निर्माणक अधिकार, ऐ सभ आर्काइवक अनुवाद आ लिप्यंतरण आ तकरो वेब-आर्काइवक निर्माणक अधिकार; आ ऐ सभ आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि। ऐ सभ लेल कोनो रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै, से रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक इच्छुक रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता विदेहसँ नै जुड़थु। विदेह ई पत्रिकाक मासमे दू टा अंक निकलैत अछि जे मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ www.videha.co.in पर ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।

Videha eJournal (link www.videha.co.in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language, literature and culture. It is a platform for scholars, researchers, writers and poets to publish their works and share their knowledge about Maithili language, literature, and culture. The journal is published online to promote and preserve Maithili language and culture. The journal publishes articles, research papers, book reviews, and poetry in Maithili and English languages. It also features translations of literary works from other languages into Maithili. It is a peer-reviewed journal, which means that articles and papers are reviewed by experts in the field before they are accepted for publication.

Font/ Keyboard Source: https://fonts.google.com/ , https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts , https://keyman.com/

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

© Preeti Thakur (sales.videha@gmail.com)

VIDEHA MITHILA STUDENT UNION (M.S.U.) SPECIAL ISSUE: Editor Gajendra Thakur

समानान्तर परम्पराक विद्यापति- मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (विद्यापतिक चित्र: विदेह चित्रकला सम्मानसँ पुरस्कृत पनकलाल मण्डल द्वारा)। कवीश्वर ज्योतिरीश्वर(लगभग १२७५-१३५०)सँ पूर्व (कारण ज्योतिरीश्वरक ग्रन्थमे हिनक चर्च अछि), मैथिलीक आदि कवि। संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापति ठक्कुरःसँ भिन्न। सम्भवतः बिस्फी गामक बार्बर कास्टक श्री महेश ठाकुरक पुत्र। समानान्तर परम्पराक बिदापत नाचमे विद्यापति पदावलीक (ज्योतिरीश्वरसँ पूर्वसँ) नृत्य-अभिनय होइत अछि।ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापति:- कश्मीरक अभिनव गुप्त (दशम शताब्दीक अन्त आ एगारहम शताब्दीक प्रारम्भ)- ग्रन्थ "ईश्वर प्रत्याभिज्ञा-विभर्षिणी" मे विद्यापतिक उल्लेख करै छथि। श्रीधर दासक सदुक्तिकर्णामृत, (रचना ११ फरबरी १२०६, मध्यकालीन मिथिला, वि.कु. ठाकुर)- श्रीधर दास विद्यापतिक पाँच टा पद उद्धृत केने छथि जे विद्यापतिक पदावलीक भाषा छी। "जाव न मालतो कर परगास/ तावे न ताहि मधुकर विलास।" आ "मुन्दला मुकुल कतय मकरन्द।" ज्योतिरीश्वर (१२७५-१३५०) षष्ठः कल्लोल- ॥अथ विद्यावन्त वर्णना॥ अष्टमः कल्लोलः- ॥अथ राज्य वर्णना॥ मे उल्लेख।

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत्। हनुमन्तः उक्तवान- मानुषीमिह संस्कृताम्।

<u>अक्खर खम्भा (आखर खाम्ह)</u>

तिहुअन खेत्तहि काजि तसु कित्तिवल्लि पसरेइ। अक्खर खम्भारम्भ जउ मञ्चो बन्धि न देइ॥ ***(कीर्तिलता प्रथमः पल्लवः पहिल दोहा।)*** माने आखर रूपी खाम्ह निर्माण कऽ ओइपर **(*गद्य-पद्य रूपी*)** मंच जँ नै बान्हल जाय तँ ऐ त्रिभुवनरूपी क्षेत्रमे ओकर कीर्तिरूपी लत्ती केना पसरत।

शुक्ल यजुर्वेद (२६.२)-यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च।।हम सभ गोटेकेँ ई पवित्र वाणी (वेदवाणी) सुनाबी। ब्राह्मणकेँ, क्षत्रियकेँ, शूद्रकेँ आ आर्यकेँ; अपन लोककेँ आ अपरिचितकेँ सेहो (माने सभकेँ)। मुदा ऐ वेदवाक्यक विपरीत मनुस्मृति वेदवाणीक अध्ययन/ श्रवणकेँ समाजक किछु गोटे लेल निषेध करऽ चाहलक, मुदा स्मृति सेहो वेदवाक्यकेँ प्रमाण मानैत अछि (शब्द प्रमाण) तेँ तकर विरुद्ध देल ओकर निर्देश स्वयं अमान्य भऽ जाइत अछि।

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant.
-Robert Louis Stevenson

Videha: Maithili Literature Movement

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्तिः

ঔঁ দ্যৌঃ শান্তিৰন্তৰিক্ষ W শান্তিঃ

ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्तिः पृथ्वी शान्तिराप: शान्तिरोषधय: शान्ति वनस्पतय: शान्ति र्वश्वे देवा: शान्तिर्ब्रह्म

𑓆 𑒠𑓂𑒨𑒾: 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑒢𑓂𑒞𑒩𑒱𑒏𑓂𑒭 Ẇ 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑓁 𑒣𑒵𑒟𑓂𑒫𑒲 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑒰𑒣: 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑒼𑒭𑒡𑒨: 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱 𑒫𑒢𑒮𑓂𑒣𑒞𑒨: 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑓂𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒹 𑒠𑒹𑒫𑒰: 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑓂𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧

ब्रह्मणसँ प्रार्थना जे द्युलोकमे, अंतरिक्षमे, पृथ्वीपर, जलमे, औषधमे, वनस्पतिमे, विश्वमे, सभ देवतागणमे आ ब्रह्ममे शांति हुअय।

ॐ-ब्रह्मण, द्यौ-सूर्य-तरेगण, अंतरिक्ष- पृथ्वी आ द्यूलोकक बीच, आप:-जल, विश्वेदेवा- सभ देवता, ब्रह्म- सर्जक।

𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒝𑒮𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒩𑓂𑒟𑒢𑒰 𑒖𑒹 𑒠𑓂𑒨𑒳𑒪𑒼𑒏𑒧𑒹, 𑒁𑓀𑒞𑒩𑒱𑒏𑓂𑒭𑒧𑒹, 𑒣𑒵𑒟𑓂𑒫𑒲𑒣𑒩, 𑒖𑒪𑒧𑒹, 𑒎𑒭𑒡𑒧𑒹, 𑒫𑒢𑒮𑓂𑒣𑒞𑒱𑒧𑒹, 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒧𑒹, 𑒮𑒦 𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰𑒑𑒝𑒧𑒹 𑒂 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒧𑒹 𑒬𑒰𑓀𑒞𑒱 𑒯𑒳𑒁𑒨।

𑓆-𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒝, 𑒠𑓂𑒨𑒾-𑒮𑒴𑒩𑓂𑒨-𑒞𑒩𑒹𑒑𑒝, 𑒁𑓀𑒞𑒩𑒱𑒏𑓂𑒭- 𑒣𑒵𑒟𑓂𑒫𑒲 𑒂 𑒠𑓂𑒨𑒴𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒥𑒲𑒔, 𑒂𑒣:-𑒖𑒪, 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒹𑒠𑒹𑒫𑒰- 𑒮𑒦 𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰, 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧- 𑒮𑒩𑓂𑒖𑒏।

ॐ, स॒हस्रंशीर्षा॒ पुरुंषः। स॒ह॒स्रा॒क्षः स॒हस्रंपात्।

ওঁ, স↓হস্রা↑ শীর্ষা↓ পুরু↑ষঃ। স↓হ↓স্রা↓ক্ষঃ স↓হস্রা↑পাৎ।

स भूमिं ग्वंग वि॒श्वतों वृ॒त्वा। अत्यंतिष्ठद् दशाङ्गु॒लम्॥

স ভূমিঁ↑ Ẇ বি↓শ্বতো↑ বৃ↓ত্বা। অত্য↑তিষ্ঠদ্ দশাঙ্গু↓লম্॥

हजार माथ, हजार आँखि, हजार पएर संग विश्वकेँ आच्छादित केने अछि, दस आंगुरक गनतीक वशमे नै अछि ओ।

ॐ स॒हस्र॑शीर्षा पुरु॑षः सहस्रा॒क्षः
स॒हस्र॑पात् ॥ स भू॒मिꣳ स॒र्वत॑स्पृ॒त्वा
त्य॑तिष्ठद्दशाङ्गु॒लम् ॥

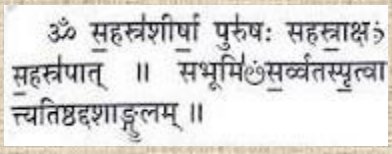

प॒द्भ्यागँ् शू॒द्रो अंजायत॥

প↓দ্ভ্যাগ্ঁ↑ শূ↓দ্রো অ↑জাযত॥

पएरसँ शूद्रक उत्पत्ति भेल॥

प॒द्भ्यां भूमि॒र्दिश॒: श्रोत्राँत्।

প↓দ্ভ্যাং ভূমি↓র্দিশঃ↓ শ্রোত্রা↑↑ৎ।

मुदा पएरेसँ भूमियोक उत्पत्ति।

❀ (White Florette- innocence and purity)

☸ (Wheel of Dharma)

卐 (Swastik)

Ẇ (Gwang ग्वंग- two small circles connected by u and a dot placed over it, used in reference of Vedic texts)

꣼ (सिद्धिरस्तु, सिद्धम 𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡𑒱𑒩𑒮𑓂𑒞𑒳, 𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡𑒧 Devanagari Anji)

(Bengali Anji, Siddham)

𑓆 (Tirhuta Anji, Ankush of Ganeshji, placed at the beginning of something)

सोशल मीडिया, अन्तर्जाल आ दूरदर्शनक कार्यक्रम सभमे वेदमे ई लिखल अछि, ई वर्णित अछि, शूद्रक प्रति, स्त्रीक प्रति, शूद्रक स्त्रीक प्रति अपमान जनक गप लिखल अछि; ई सभ सूनि कऽ कियो विकीपीडिया आ आन आन ठाम अन्तर्जालपर लेख सभमे परिवर्तन कऽ देने रहथि। एक गोटे अंग्रेजीमे लिखलनि- “अथर्ववेदमे शूद्रक पत्नीकेँ बिना स्वीकृतिक कियो हाथ पकड़ि लऽ जा सकय, बला वक्तव्य अछि।” हम कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक, खण्ड-८; प्रबन्ध निबन्ध समालोचना भाग-२, २०१४ मे अपन आलेख “विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निवारण” मे लिखने रही-

“.. ई ओहिना भेल जेना अथर्ववेदमे शूद्रक पत्नीकेँ बिना स्वीकृतिक कियो हाथ पकड़ि लऽ जा सकए बला वक्तव्य।”

मुदा अथर्ववेद बा कोनो वेदमे ओइ तरहक वक्तव्य कत्तौ नै आयल अछि। तकर विपरीत शुक्ल यजुर्वेद ई कहैत अछि:-

शुक्ल यजुर्वेद (२६.२)-यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च।।हम सभ गोटेकें ई पवित्र वाणी (वेदवाणी) सुनाबी। ब्राह्मणकें, क्षत्रियकें, शूद्रकें आ आर्यकें; अपन लोककें आ अपरिचितकें सेहो (माने सभकें)। मुदा ऐ वेदवाक्यक विपरीत मनुस्मृति वेदवाणीक अध्ययन/ श्रवणकें समाजक किछु गोटे लेल निषेध करऽ चाहलक, मुदा स्मृति सेहो वेदवाक्यकें प्रमाण मानैत अछि (शब्द प्रमाण) तें तकर विरुद्ध देल ओकर निर्देश स्वयं अमान्य भऽ जाइत अछि।

वेद मे उपलब्ध शूद्र शब्दक उल्लेखित अंशक संग्रह नीचाँ देल जा रहल अछि। शूद्रक अपमानजनक उल्लेख तँ नहिये अछि, वरन् पएरसँ पवित्र पृथ्वीक जन्मक उल्लेख अछि आ तही उत्पत्तिक सादृश्यताक कारणसँ मानव समुदायक पालक शूद्र कहल गेल छथि।

पद्भ्याग्ँ शूद्रो अंजायत॥

पएरसँ शूद्रक उत्पत्ति भेल॥

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रांत्।

मुदा पएरेसँ भूमियोक उत्पत्ति।

REFERENCE OF SHUDRAS IN VEDAS [Dr Tulsi Ram, 2013, Atharveda: Samaveda: Yajurveda: Rigveda; English Translations]

ATHARVA VEDA (3 references)

KANDA-14

(MARRIAGE AND FAMILY) Kanda 14/Sukta 1 (Surya’s Wedding)

Devata: Dampati; Rshi: Surya Savitri

60*. Bhagastataksha caturah padanbhagastataksha catvaryuspalani. Tvasta pipesa madhyatonu vardhrantsa no astu sumangali.*

Bhaga, lord sustainer and ordainer of life, has framed the value orders of life: Dharma, Artha, Kama and Moksha; four social orders: Brahmana, Kshatriya, Vaishya and **Shudra**; four stages of personal life: Brahmacharya, Grhastha, Vanaprastha and Sanyasa. Tvashta, lord maker and organiser of life, has placed the woman as partner of man in matrimony in this order and organisation. May the bride be good and auspicious for us.

भाग- पालनकर्ता आ जीवनक अधिष्ठाता- जीवनक मूल्य क्रम तैयार केने छथिः धर्म, अर्थ, काम आ मोक्ष; चारि सामाजिक क्रम- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आ शूद्र; व्यक्तिगत जीवनक चारि चरण- ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ आ सन्यास।त्वष्टा- स्वामी निर्माता आ जीवनक आयोजक- एहि क्रममे आ सङ्गठनमे स्त्रीकेँ विवाहमे पुरुषक साथीक रूपमे रखने छथि। से वधू हमर सभक लेल नीक आ शुभ होथि।

Kanda 19/Sukta 6 (Purusha, the Cosmic Seed)

Purusha Devata, Narayana Rshi

6. *Brahmano sya mukhamasid bahu rajanyo bhavat. Madhyam tadasya yadvaishyah padbhyam sudro ajayata.*

Brahmana, (man of knowledge, divine vision and the Vedic Word in the human community) is the mouth of the Samrat Purusha. Kshatriya, man of justice and polity, is the arms of defence and organisation. The middle part is the Vaishya who produces and provides food and energy. And the ancillary services that provide sustenance and support with auxiliary labour are the feet, the **Shudra** that bears the burden of society.

ब्राह्मण (ज्ञानी, दिव्य दृष्टि आ मानव समुदाय लेल वैदिक शब्द) सम्राट पुरुषक मुख अछि। क्षत्रिय -न्याय आ राजनीतिक लोक- रक्षा आ सङ्गठनक हाथ छथि। मध्य भाग वैश्य छथि

जे भोजन आ ऊर्जाक उत्पादन आ आपूर्ति करैत छथि। आ सहायक सेवा जे सहायक श्रमक सङ्ग निर्वाह आ सहायता प्रदान करैत अछि, ओ अछि पैर, शूद्र जे समाजक भार वहन करैत छथि।

Kanda 19/Sukta 32 (Darbha)

Darbha Devata, Bhrgu Ayushkama Rshi

8. *Priyam ma darbha krunu brahmarajanyabhyam sudraya charyaya cha. Yasmai ca kamayamahe sarvasmai cha vipasyate.*

O Darbha, destroyer and preserver, eternal sanative, render me dear and loving to and loved by all Brahmanas, Kshatriyas, Vaishyas, **Shudra**s, whoever we love and desire, and all those who have the eye to see (and discriminate right and wrong).

हे दर्भा, विनाशक आ संरक्षक, शाश्वत विवेकशील; हमरा सभकेँ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, सभक प्रिय आ प्रेमी बना दिअ। संगे ओ सभ हमरा सभसँ प्रेम् करथि जिनका सँ हम प्रेम करी बा जिनकर कामना करी; आ ओ सभ जिनका लग देखबाक दृष्टि अछि (आ सही आ गलतमे भेद बुझैत छथि)।

SAMAVEDA (o reference)

YAJURVEDA (7 references)

CHAPTER- VIII

30. (Dampati Devata, Atri Rshi)

Purudasmo visuruupa indurantarmahimanamanaja dhirah. Ekapadim dvipadim tripadim chatupadimastapadim bhuvananu prathantam svaha.

The man of mighty deeds, who eliminates suffering and creates joy, of versatile attainments, bright and honourable, constant and resolute, should wait for the great new arrival. Men of the household, cultivate the vaidic culture of one, two, three, four and eight steps of attainment: one: Aum; two: worldly fulfilment and the freedom of moksha; three: the joy of the truth of word and the health of body and mind; four: the attainment of Dharma, wealth, fulfilment of desire, and moksha; eight: the joy of all the four classes and all the four stages of life (Brahmana, Kshatriya, Vaishya and **Shudra**, Brahmacharya, Grihastha, Vanaprastha and Sanyasa). Build homes for the people and advance in life.

शक्तिशाली कर्मक पुरुष, जे दुःखकेँ समाप्त करैत अछि आ आनन्द उत्पन्न करैत अछि, बहुमुखी उपलब्धिक, उज्ज्वल आ सम्मानजनक, स्थिर आ दृढ़ संकल्पित, ओकरा महान नव आगमनक प्रतीक्षा करबाक चाही। घरक लोक, उपलब्धिक एक, दू, तीन, चारि आ आठ चरणक वैदिक संस्कृति विकसित करैत छथिः एकः ओम; दुइः सांसारिक पूर्ति आ मोक्ष रूपी स्वतन्त्रता; तीनः वचनक सत्यक आनन्द आ शरीर आ मस्तिष्कक स्वास्थ्य; चारिः धर्मक प्राप्ति, धन, इच्छाक पूर्ति, आ मोक्ष; आठः जीवनक चारि वर्ग आ चारि चरणक आनन्द (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आ शूद्र, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वनप्रस्थ आ सन्यास)। लोकक लेल घर बनाउ आ जीवन मे प्रगति करू।

CHAPTER- XVIII

48. (Brihaspati Devata, Shunah-shepa Rshi)

Rucham no dhehi brahmanesu rucham rajasu naskrudhi.
Rucha vishyesu shudreshu mayi dhehi rucha rucham.

Brihaspati, lord of the universe, eminent teacher and master of vast knowledge, inspire our Brahma section of the community—scholars, scientists, teachers and researchers with brilliance and love. Infuse brilliance, love and justice into our Kshatrias, defence, administration and justice

section of the community. Bless with light, love and generosity our Vaishyas, producers and distributors among the community. And bless our **Shudra**s, the ancillary services, with light, love and loyalty. Bless me with light and love toward us all.

बृहस्पति- ब्रह्माण्डक स्वामी, प्रख्यात शिक्षक आ विशाल ज्ञानक स्वामी- समुदायक ब्रह्म वर्ग- विद्वान, वैज्ञानिक, शिक्षक आ शोधकर्ता- कँ प्रतिभा आ प्रेम सँ प्रेरित करू। हमर क्षत्रिय- रक्षा, प्रशासन आ न्याय- समुदायक वर्गमे प्रतिभा, प्रेम आ न्यायक संचार करू। हमर वैश्य- समुदायक निर्माता आ वितरक- सभकेँ प्रकाश, प्रेम आ उदारतासँ आशीर्वाद दियौ। आ हमर सभक शूद्र -समुदायक सहायक सेवी- कँ प्रकाश, प्रेम आ निष्ठा सँ आशीर्वाद दियौ। हमरा सभ कँ प्रकाश आ प्रेम सँ आशीर्वाद दियौ।

CHAPTER- XXV

23. (Dyau etc. Devata, Prajapati Rshi)

Aditirdyauraditirantarikshamaditirmata sa pita sa putrah. Vishve deva aditih pancha jana aditirjatamaditirjanitvam.

In the essence: Light is indestructible; sky is indestructible; mother Prakriti (matter-energy-thought) is indestructible; Father, the Cosmic Spirit is indestructible; Son, the soul (jiva), is indestructible; all the divinities of nature and humanity are indestructible; five people, Brahmana, Kshatriya, Vaishya, **Shudra**, others, are indestructible; whatever is born is indestructible; whatever will be born is indestructible. (All that was, is and shall be is indestructible in the essence.)

सारमे: प्रकाश अविनाशी अछि; आकाश अविनाशी अछि; माता प्रकृति (पदार्थ-ऊर्जा-विचार) अविनाशी अछि; पिता, ब्रह्मांडीय आत्मा अविनाशी अछि; पुत्र, आत्मा (जीव) अविनाशी अछि; प्रकृति आ मानवताक सभ देवत्व अविनाशी अछि; पाँच व्यक्ति, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आ आन अविनाशी अछि; जे किछु जन्मल अछि से अविनाशी अछि; जे किछु जन्मत से अविनाशी अछि। (जे किछु छल, अछि बा रहत/ आओत से सार मे अविनाशी अछि।)

CHAPTER- XXVI

2. (Ishvara Devata, Laugakshi Rshi)

Yathemam vacham kalyanimavadani janebhyah. Brahmarajanyabhyam Shudraya charyaya cha svaya charayaya cha. Priyo devanam dakshinayai daturiha bhuyasamayam me kamah samrudhyatamupa mado namatu.

Just as this blessed Word of the Veda I speak for the people, all without exception, Brahmana, Kshatriya, **Shudra**, Vaishya, master and servant, one's own and others, so do you too. May I be dear and favourite with the noble divinities and the generous people for the gift of the sacred speech. May this noble aim of mine be fulfilled here in this life. May the others too follow and come my way beyond this life.

जेना वेदक ई धन्य वचन हम बिना कोनो अपवादक, ब्राह्मण, क्षत्रिय, शूद्र, वैश्य, स्वामी आ सेवक, अपन आ अन्य लोकक लेल कहैत छी, तहिना अहाँ सेहो करैत छी। पवित्र भाषणक ऐ उपहारक लेल हम महान देवत्व आ उदार लोक सभक प्रिय आ मनभावन रही। हमर ई महान उद्देश्य ऐ जीवन मे पूर हुअय। आन सभ सेहो हमर मार्गक अनुसरण करैत बढ़ैत जाय आ से ऐ जीवनसँ आगाँ धरि बढ़य।

CHAPTER- XXX

5. (Parameshvara Devata, Narayana Rshi)

Brahmane brahmanam kshatraya rajanyam marudbhyo vaishyam tapase Shudram tamase taskaram narakaya virahanam papmane klibamakrayayaayogum kamaya punshchalumatikrustaya magadham.

Give us, we pray, the Brahmanas for education and research, culture and human values; the Kshatriyas for governance, defence and administration; the Vaishyas for economic

development, and the **Shudra**s for assistance and labour in the ancillary services. Remove, we pray, the thief roaming in the dark, the murderer bent on lawlessness, the coward disposed to sin, the armed terrorist bent on destruction, the harlot out for pleasure of flesh, and the bastard fond of scandal.

Note: In mantras 5-22 in which various aspects of organised life are listed, there is repetition of 'asuva' and 'parasuva' from mantra 3, which means: 'Give us, we pray, what is good', and, 'Remove, we pray, what is evil'. This is the prayer. Also, there are echoes of 'havamahe' from mantra 4, which means: 'We invoke and develop', and, 'we challenge and fight out'. This is the call for action under the divine eye.

शिक्षा आ शोध, संस्कृति आ मानवीय मूल्यक लेल ब्राह्मण; शासन, रक्षा आ प्रशासनक लेल क्षत्रिय; आर्थिक विकासक लेल वैश्य; आ सहायक सेवामे सहायता आ श्रम लेल शूद्र हमरा दिअ से हम प्रार्थना करैत छी। हम प्रार्थना करैत छी जे अन्हारमे घुमैत चोर, अराजकता पर बिर्त खूनी, पाप पर बिर्त कायर, विनाश पर बिर्त सशस्त्र आतंकवादी, दैहिक सुख लेल बाहर गेल वेश्या, आ कलंकक शौकीन नाजायजकेँ हटा दियौ।

नोटः मंत्र 5-22 मे, जइमे संगठित जीवनक विभिन्न पक्ष सूचीबद्ध अछि, मंत्र 3 सँ 'आशुवा' आ 'परशुवा' क पुनरावृत्ति होइत अछि, जकर अर्थः 'हमरा सभ केँ दिअ, हम प्रार्थना करैत छी, जे नीक अछि', आ, 'हटाउ, हम प्रार्थना करैत छी, जे अधलाह अछि'। ई प्रार्थना अछि। सङ्गहि, मंत्र 4 सँ 'हवामाहे' क प्रतिध्वनि अछि, जकर अर्थः 'हम आह्वान करैत छी आ आगू बढ़बै छी', आ, 'हम माँटि दइ छी आ लड़ै छी'। ई दिव्य दृष्टिक अन्तर्गत काज करबाक आह्वान अछि।

CHAPTER- XXX

22. (Rajeshvarau Devate, Narayana Rshi)

Athaitanastauau virupanalabhateitidirgham chatihrasvam chatisthulam chatikrusham chatishuklam chatikrushnam chatikulvam chatilomasham cha. Ashudra abrahmanaste

prajapatyah. Magadhah punshchali kitavah kliboshudra abrahmanaste prajapatyah.

The good human being accepts and works with these eight classes of people of different forms and colours: too tall, too short, too fat, too thin, too white, too dark, too hairless, too hairy. Also they are neither Brahmanas nor **Shudra**s (nor the others). They too, all of them, are children of God, Prajapati. Even the bastard and the 'despicable', the wanton, the gambler, and the coward and the eunuch, neither **Shudra**s nor Brahmanas (nor the others), they too are children of God, Prajapati, father of all.

नीक लोक विभिन्न रूप आ रङ्गक ऐ आठ वर्गक लोकक संग स्वीकार करैत अछि आ काज करैत अछिः खूब लम्बा, बड्डु छोट, बड्डु मोट, खूब पातर, बड्डु गोर, बड्डु कारी, बहुत कम केशबला, खूब केशबला। ओ सभ ने ब्राह्मण छथि, नहिये शूद्र (आ नहिये आन कियो)। ओ सभ सेहो भगवान प्रजापतिक सन्तान छथि। एतऽ धरि जे नाजायज बा 'घृणित', ऊधमी, जुआरी, आ कायर आ नपुंसक, ने शूद्र, नहिये ब्राह्मण (नहिये आन कियो), ओ सभ सेहो भगवान प्रजापतिक सन्तान छथि, प्रजापति- सभक पिता।

CHAPTER- XXXI

11. (Purusha Devata, Narayana Rshi)

Brahmanosya mukhamashid bahu rajanyah krutah. Uru tadasya yadvaishyah padbhyam Shuudro ajayata.

The Brahmana, man of divine vision and Vedic Word, is the mouth of the Samrat Purusha, the human community. The Kshatriya, man of justice and polity, is created as the arms of defence. The Vaishya, who produces food and wealth for the society, is the thighs. And the man of sustenance and support with labour is the **Shudra** who bears the burden of the human family.

दिव्य दृष्टि आ वैदिक वचनक लोक ब्राह्मण, सम्राट पुरुष-मानव समुदाय-क मुख छथि। न्याय आ शिष्टताक लोक क्षत्रियकेँ रक्षाक हथियारक रूपमे बनाओल गेल अछि। वैश्य, जे समाजक लेल भोजन आ धन उत्पन्न करैत छथि, जांघ छथि। आ श्रमक सङ्ग निर्वाह आ सहारा देबऽबला व्यक्ति शूद्र छथि जे मानव परिवार सभकक भार वहन करैत छथि।

RIG VEDA (2 references)

Mandala 10/Sukta 90

Purusha Devata, Narayana Rshi

12. Brahmano sya mukhamasidbahu rajanyah kritah. Uru tadasya yadvaisyah padbhyam sudro ajayata.

The Brahmana, man of divine vision and the Vedic Word, is the mouth of the Samrat Purusha, the human community. Kshatriya, man of justice and polity, is created as the arms of defence. The Vaishya, who produces food and wealth for the society, is the thighs. And the man of sustenance and ancillary support with labour is the **Shudra** who bears the burden of the human family as the legs bear the burden of the body.

दिव्य दृष्टि आ वैदिक वचन बला ब्राह्मण, सम्राट पुरुष-मानव समुदाय- क मुख छथि। क्षत्रिय-न्याय आ राजनीतिक लोक- केँ रक्षाक हथियारक रूपमे बनाओल गेल अछि। वैश्य, जे समाजक लेल भोजन आ धन उत्पन्न करैत छथि, जांघ छथि। आ जीविकोपार्जन आ श्रमक सङ्ग सहायक व्यक्ति शूद्र छथि जे मानव परिवारक भार वहन करैत छथि जेना पैर शरीरक भार वहन करैत अछि।

Mandala 10/Sukta 124

Devata: Agni (1); Rshi: Agni, Varuna, Soma

1. *Imam no agna upa yajnamehi panchayamam trivritam saptatantum. Aso havyavaluta nah puroga jyogeva dirgham tama ashayishthah.*

Agni, yajnic light of life, come to this life yajna of ours: which has five divisions, i.e., Brahma-yajna, Deva-yajna, Pitr-yajna, Atithi-yajna, and Balivaishvadeva-yajna; conducted by five people, i.e, four socioeconomic classes of Brahmans, Kshatriyas, Vaishyas and **Shudra**s and others like chance visitors from other groups there might be; which is threefold, i.e., paka yajna, haviryajna and somayajna; and which has seven extensions, i.e., Agnishtoma, Atyagnishtoma, Ukthya, Shodashi,Vajapeya, Atiratra and Aptoyami. You are our leader and pioneer, Agni, and you are the carrier of our yajna to the divinities as well as harbinger of the fruits of yajna to us. Pray come and be our all-time dispeller of the cavern of deep darkness from life. (Yajna is a creative process of development in life from the individual to the social, national, global and environmental level of life. The explanation above is related to the social level. Swami Brahmamuni explains the yajna at the individual level, and that is also suggested in Rgveda 10, 7, 6: 'Svayam yajasva', and yajurveda 4, 13: "Iyam te yajniya tanu", which means: Develop yourself by yajna according to the seasons of your growth, and remember your life in body, mind and soul is worthy of yajnic service for your personal development, your body being the first instrument of your wider yajna of life. This personal yajna is fivefold, for the elemental balance of earth, water, heat, air and ether; threefold for the balance of vata, pitta and kaf, and also for balanced growth of body, mind and soul; sevenfold for the growth of rasa, rakta, mansa, meda, asthi, majja and virya. Thus yajna is the process of growth beginning with the individual, accomplished at the cosmic level.)

अग्नि -जीवनक यज्ञक प्रकाश- हमर सभक ऐ जीवन-यज्ञमे आउ, जइमे पाँच विभाग छै, अर्थात, ब्रह्म-यज्ञ, देव-यज्ञ, पितृ-यज्ञ, अतिथि-यज्ञ, आ बलिवैश्वदेव-यज्ञ; पाँच लोक द्वारा संचालित, अर्थात, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आ शूद्र क चारि सामाजिक-आर्थिक वर्ग आ पाँचम आन समूह कखनो काल आयल आगंतुक। आ से तीनटा छै- अर्थात, पाक यज्ञ, हविर्यज्ञ आ सोमयज्ञ; आ जकर सात विस्तार छै, अर्थात, अग्निष्टोम, अत्यग्निष्टोम, उक्त्या, षोडषी, वाजपेय, अतिरात्र आ अप्तोयमी। अग्नि, अहाँ हमरा सभक नेता आ अग्रगामी छी, आ अहाँ देवत्व लेल हमर यज्ञक वाहक छी आ सङ्गहि हमरा सभक लेल यज्ञक फलक अग्रदूत छी। प्रार्थना अछि जे आउ आ हमरा सभक जीवन तरहरि सन अन्हार सदाक लेल दूर करैबला बनू। (यज्ञ व्यक्तिगतसँ जीवनक सामाजिक, राष्ट्रीय, वैश्विक आ पर्यावरणीय स्तर धरि जीवनक विकासक एकटा रचनात्मक प्रक्रिया अछि। उपरोक्त व्याख्या सामाजिक स्तरसँ सम्बन्धित अछि। स्वामी ब्रह्ममुनी व्यक्तिगत स्तर पर यज्ञक व्याख्या करैत छथि, आ ई ऋग्वेद 10,7,6 मे सेहो सुझाओल गेल अछि: 'स्वयं यज्ञ'; आ यजुर्वेद 4,13: 'इयम ते यज्ञीय तनू', जकर अर्थ अछि- अपन विकासक ऋतुक अनुसार यज्ञ द्वारा अपना कैं विकसित करू, आ मोन राखू जे शरीर, मन आ आत्मा युक्त अहाँक जीवन यज्ञक सेवाक लेल अछि, आ तइसँ अहाँक व्यक्तिगत विकास हएत; अहाँक शरीर अहाँक जीवनक व्यापक यज्ञक पहिल साधन अछि। ई व्यक्तिगत यज्ञ पाँच प्रकारक अछि, पृथ्वी, जल, ऊष्मा, वायु आ आकाशक मौलिक संतुलनक लेल; तीन प्रकारक- वात, पित्त आ कफक संतुलनक लेल; आ शरीर, मन आ आत्माक संतुलित विकासक लेल सेहो; सात प्रकारक माने रस, रक्त, मानस, मेधा, अस्थि, मज्जा आ विर्यक विकासक लेल। ऐ तरहेँ यज्ञ व्यक्तिसँ शुरू होइत विकासक प्रक्रिया अछि, जे ब्रह्मांडीय स्तर पर सम्पन्न होइत अछि।)

आब आउ यूरोपक विद्वान लोकनि द्वारा वेदक गलत अनुवादक किछु उदाहरण देखू:-

EXAMPLES OF SOME MISTRANSLATIONS OF VEDAS BY WESTERN SCHOLARS

I

W.D. Whitney’s translation of the Atharvaveda (7, 107, 1) edited and revised by K.L. Joshi, published by Parimal Publications, Delhi, 2004:

Namaskrutya dyavapruthivibhyamantarikshaya mrutyave.

Mekshamyurdhvastisthaan ma ma hinsishurishvarah.

“Having paid homage to heaven and earth, to the atmosphere, to Death, I will urinate standing erect; let not the Lords (Ishvara) harm me.” I give below an English rendering of the same mantra translated by Pundit Satavalekara in Hindi:

“Having done homage to heaven and earth and to the middle regions and Death (Yama), I stand high and watch (the world of life). Let not my masters hurt me.”

An English rendering of the same mantra translated by Pundit Jai Dev Sharma in Hindi is the following:

“Having done homage to heaven and earth (i.e. father and mother) and to the immanent God and Yama (all Dissolver), standing high and alert, I move forward in life. These masters of mine, pray, may not hurt me.”

I would like to quote my own translation of the mantra now under print:

“Having done homage to heaven and earth, and to the middle regions, and having acknowledged the fact of death as inevitable counterpart of life under God’s dispensation, now standing high, I watch the world and go forward with showers of the cloud. Let no powers of earthly nature hurt and violate me.”

‘Showers of the cloud’ is a metaphor, as in Shelley’s poem ‘the Cloud’: “I bring fresh showers for the thirsting flowers”, which suggests a lovely rendering.

The problem here arises from the verb ‘mekshami’ from the root ‘mih’ which means ‘to shower’ (sechane). It depends on the translator’s sense and attitude to sacred writing how the message is received and communicated in an interfaith context with no strings attached (or unattached).

[Dr Tulsi Ram, 2013, Atharveda: English Translation; Page xxvi]

II

The idea that there was slavery in the Vedic Society originated with the Western Indologists with their intentional or careless translation of a Sanskrit word into “slave”. For example, in the Taittiriya Samhita (Krishna Yajurveda), [7.5.10] [kanda 7,prapathaka 5, verse 10], a part of translation by Keith reads “slave girls dance around the fire”. But in a footnote in the same page [pg., 628, Vol. 2] the author Keith says that the verse describes the dance of maidens. Suddenly the maidens have become “slave girls”. Both Paranjape and Avinash Bose point to the mistranslation of the word ‘yosha’ as courtesan by the indologist Pischel [Bose, Hymns from the Veda, p. 36].

[Veda Books,SRI AUROBINDO KAPALI SHASTRY INSTITUTE OF VEDIC CULTURE, page 240]

III

In 1795, H.T. Colebrooke, then a young scholar, wrote his maiden paper, “On the Duties of a Faithful Hindu Widow,” for the Asiatic Society (Asiatic Researches IV 1795: 205-15). He cited the hymn from the Rig Veda as sanctioning widow burning, which William Jones immediately contested (Canon 1993 I:lxx). Colebrooke translated the end of the hymn as “let them pass into fire, whose original element is water.” A quarter of a century later, the Orientalist, H.H. Wilson pointed out that the hymn had been distorted (Wilson 1854: 201-14; Cassels 2010: 89). Wilson translated the verse as per the reading corroborated by Sayana, the authoritative medieval commentator on the Vedas, and demonstrated that it did not refer to widow burning (Rocher and Rocher 2012: 24-25).

[Meenakshi Jain,2016; Sati: Evangelicals, Baptist Missionaries; and the Changing Colonial Discourse, Page 5)

ƒ

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant. -Robert Louis Stevenson

---

विदेह ३७१ म अंक ०१ जून २०२३ (वर्ष १६ मास १८६ अंक ३७१)
[विदेह (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) www.videha.co.in]

मिथिला स्टूडेण्ट यूनियन (एम.एस.यू.) विशेषांक

अनुक्रम

मिथिला स्टूडेण्ट यूनियन (एम.एस.यू.) विशेषांक

१.गजेन्द्र ठाकुर- विदेह सम्पादकीय- मिथिला स्टूडेण्ट यूनियन (एम.एस.यू.) विशेषांक (पृ. २-२)

२.१.प्रस्तुत विशेषांकक संदर्भमे (पृ.३-१६)

२.२.एम.एस.यू. क संक्षिप्त परिचय (पृ.१७-२१)

२.३.चंदना दत्त- MSU (पृ.२२-२३)

२.४.हिमकर भारद्वाज- "एम.एस.यू (MSU)-मिथिला स्टूडेंट यूनियन"सँ "मिथिलावादी पार्टी" धरि (पृ.२४-३४)

२.५.अजित कुमार झा- घटाटोप अन्हरिया मे उम्मीदक किरण: मिथिला स्टूडेंट्स युनियन (पृ.३५-४०)

२.६.सच्चिदानंद सच्चू- मैथिल संगठन आ ओकर सामाजिक सरोकार (पृ.४१-४८)

२.७.लक्ष्मण झा सागर- मिथिला स्टूडेंट यूनियन (पृ.४९-५३)

२.८.प्रणव झा- मिथिला स्टूडेंट यूनियन (पृ.५४-५९)

२.९.आचार्य रामानंद मंडल- मिथिला स्टूडेंट्स यूनियन बनाम मिथिला राज्य! (पृ.६०-६१)

२.१०.डॉ कैलाश कुमार मिश्र-मिथिला स्टूडेंट यूनियन: दशा, दिशा आ नेतृत्व (पृ.६२-६७)

२.११.लालदेव कामत- एम एस यू केर हश्र (पृ.६८-६९)

२.१२.आशीष अनचिन्हार- MSU केर काज एवं हमर अपेक्षा (पृ.७०-७३)

२.१३.प्रवीण कुमार झा- जनहित परिप्रेक्ष्य मे (पृ.७४-७५)

३. विदेह ३७२ म अंक १५ जून २०२३ (वर्ष १६ मास १८६ अंक ३७२) अंक ३७१ पर टिप्पणी (पृ.७६-७६)

गजेन्द्र ठाकुर विदेह ई पत्रिका **http://www.videha.co.in/**
ISSN 2229-547X क सम्पादक छथि आ आइ काल्हि दिल्लीमे रहै छथि।

१.गजेन्द्र ठाकुर- विदेह सम्पादकीय- मिथिला स्टूडेण्ट यूनियन (एम.एस.यू.) विशेषांक

मैथिली आ मिथिला लेल अस्सी-अस्सी हाथक कथित साहित्यकार आ कथित लिटेरेरी एसोसियेशन (साहित्य अकादेमी पोषित) आ अन्तर्राष्ट्रिय स्तरक कथित मिथिलावादी स्वघोषित नेता आ संस्थाक अछैत मिथिला स्टूडेण्ट यूनियनपर विशेषांक निकालबाक निर्णय भेल, तकर उद्देश्य छल ई चिन्हित केनाइ जे किछु काज रेकॉर्ड बनेबाले होइ छै आ किछु काज काज होइ छै। जेना कथित मिथिला/ मैथिलीक जातिवादी संस्था सभ जइमे मैथिलीक जातिवादी रंगमंचक संस्था सभ सेहो अछि केर मुख्य काज अछि माला आदि पहिरेनाइ, पत्रिका-स्मारिका आदि छपेनाइ, जे मात्र रेकॉर्ड बनेबाले होइ छै, तकर विदेहक नजरिमे कोनो महत्व नै छै। अहाँ अपन संस्थाक नाममे अन्तर्राष्ट्रिय बा ब्रह्माण्डीय लगा लिअ, विदेह लेल ओकर कोनो महत्व नै। कारण ऐ सभ संस्था द्वारा जातिवादी कट्टरता बढ़ाओल जा रहल अछि, कारण ई सभ पॉकेट संस्था अछि।

विदेहक विशेषांक अभिनन्दन ग्रन्थ नै होइ छै। मिथिला स्टूडेण्ट यूनियनक विशेषांकमे बहुतो आलेखमे ओकरापर बहुत रास आक्षेप सेहो लागल छै। भऽ सकैए ई संस्था (एम.एस.यू.) आलोचनाक आलोकमे किछु सुधार करत, कारण ओ पॉकेट संस्था नै वरन् संस्था अछि आ तइमे कोनो संदेह नै।

-Gajendra Thakur, editor, Videha (be part of Videha www.videha.co.in -send your WhatsApp no to +919560960721 so that it can be added to the Videha WhatsApp Broadcast List.)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.१.प्रस्तुत विशेषांकक संदर्भमे

1

पोथीक रूपमे तँ संस्थाक उपर काज भेल छै। पत्रिका सभमे सेहो छिटपुट रिपोर्ट वा संस्था सभहक सूची बला आलेख सभ छपैत रहलैए। मुदा एखन धरि कोनो पत्रिका कोनो संस्थापर विशेषांक नहि प्रकाशित केने छल। जीबित लेखके जकाँ एक बेर फेर विदेह एहन काज करए बलामे पहिल भऽ गेल।

दिसम्बर 2022 मे विदेह "एम.एस.यू (MSU)-मिथिला स्टूडेंट यूनियन विशेषांक" प्रकाशित करबाक सार्वजनिक घोषणा केलक आ प्रस्तुत अछि ई विशेषांक। एहि सूचनाकेँ एहि लिंकपर देखि सकैत छी-घोषणा।

MSU पर प्रस्तुत विशेषांकमे एहि संस्थाक प्रसंशा-आलोचना सभ भेटत। लोक जकरासँ अपेक्षा करैत छै तकरे बारेमे किछु कहैत छै वा लिखैत छै। तँइ MSU केर बारेमे जे लिखल गेल छै तकरा जँ ई संस्था वा आनो संस्था सभ अपना लेत तँ ओहि संस्थाक संगे-संग मिथिलाक कल्याण भऽ जेतै। आ तँइ विदेहक हरेक विशेषांक जजाँ ईहो विशेषांक अभिनंदनग्रंथ हेबासँ बाँचि गेल अछि। मुख्यधारा जकाँ विदेहकेँ अभिनंदनग्रंथ नहि चाही। अभिनंदनग्रंथ अहू दुआरे नै चाही जे ओहिसँ लेखक वा जिनकापर निकालल गेल छनि तिनकामे सुधारक गुंजाइश खत्म भऽ जाइत छै। तँइ विदेहक विशेषांकमे आलोचना-प्रसंशा सभ भेटत।

जेना कि एहि विशेषांकसँ पहिने संस्थापर कोनो आयोजन नै भेल छै तँइ हमरा लग एकर कोनो निजगुत स्वरूप नै अछि। आ तँइ लेखक केर उपर जाहि स्वरूपमे विशेषांक अबैए ठीक तहिना ईहो भेटत। ई अलग बात जे हम सभ कतेक सफल वा असफल भेलहुँ से पाठक कहता। एहि विशेषांक केर

शुरूआत विदेहक आने विशेषांक जकाँ अछि। संगे-संग ई क्रम ने तँ उम्रक वरिष्ठता केर पालन करैए आ ने रचनाक गुणवत्ताक। हँ, एतेक धेआन जरूर राखल गेल छै जे पाठकक रसभंग नहि होइन आ से विश्वास अछि जे रसभंग नै हेतनि।

पहिने विदेहक सभ अंक नागरी, तिरहुता आ ब्रेल लिपिमे प्रकाशित होइत छल आब एहिमे कैथी, नेवाड़ी, एवं आइ.पी.ए. लिपि सेहो जोड़ल गेल अछि, मने एखन विदेह कुल छह लिपिमे प्रकाशित होइए। एकर अतिरिक्त विदेहक किछु अंक रंजना (नेवारी केर एक आर रूप), ब्राह्मी, खरोष्ठी, उर्दू, तिब्बती एवं तिब्बती-उमे लिपिमे सेहो छपल अछि। कुल मिला कऽ देखी तँ विदेह बारह लिपि अपना लेल रखने अछि जाहिमेसँ कुल छह टा लिपिमे विदेह लगातार प्रकाशित भऽ रहल अछि।

2

विदेह द्वारा लेखकपर विशेषांक 'जीबैत मुदा उपेक्षित' शृखंला रूपमे शुरू कएल गेल छल 2015 सँ जकरा आब "विदेहक जीवित मैथिलकर्मी, संगीतकर्मी, साहित्यकार-सम्पादक आ रंगमंचकर्मी-रंगमंच-निर्देशकपर विशेषांक शृंखला" नामसँ जानल जाइत अछि। मैथिलकर्मीसँ हमर सभहक आशय जिनकर काज मिथिला-मैथिली-मैथिली लेल कोनो माध्यमसँ भेल हो। ओ संगठनकर्ता सेहो भऽ सकै छथि, आन भाषाक लेखक सेहो। तहिना संगीतकर्मी मने गीत-संगीतसँ जुड़ल लोक। संगे-संग संस्था सेहो भऽ सकैए।

एहन शृखंलामे, एहि विशेषांकसँ पहिने विदेह 10 टा विशेषांक प्रकाशित कऽ चुकल अछि आ एहिठाम आब हम कहि सकैत छी जे ई एकटा चुनौतीपूर्ण काज छै। अनेक संकट केर सामना करए पड़ैत अछि लेख एकट्ठा करएमे।

मुदा संगहि ईहो हम कहब जे संकटसँ बेसी हमरा लग समर्थन अछि। हँ, ई मानएमे हमरा कोनो दिक्कत नहि जे जतेक लेख केर उम्मेद केने रहैत छी हम ततेक नै आबैए, जतेक लोक लिखबाक लेल गछैत छथि से सभ अंत- अंत धरि आबि चुप्प भऽ जाइत छथि। आ एकर कारणो छै, किनको ई लागै छनि जे आनपर लिखब से हम अपने रचना किए ने लीखि लेब, किनको लग पोथिए नै रहै छनि, जखन कि हम सभ पाठककेँ विकल्प रूपमे पोथीक पी.डी.एफ फाइल सेहो देबाक लेल तैयार रहैत छी। कियो विदेहक समावेशी रूपसँ दुखी छथि, तँ किनको मित्रकेँ विदेहसँ दिक्कत छनि तँइ ओ नहि देता। बहुत लोक तँ विदेहमे एहू लेल रचना नै पठबैत छथि जे कहीं हमरा अकादमी वा धनी संस्था सभ ने देखि लिए। अकादमी आ संस्था सभ विदेहकेँ अनेरे अपन शत्रु मानि बैसल अछि आ पुरस्कारक इच्छा रखनिहार तँइ विदेहमे रचना नै पठबै छथि। एकरो हम संकटे बुझै छियै जे सभ फेसबुकपर लंबा-लंबा लेख वा कमेंट टाइप कऽ लै छथि सेहो सभ विदेह लेल हाथसँ लिखल पठाबैत छथि। जे सभ कहियो काल फेसबुकपर टाइप कऽ लीखै छथि तिनकर आलेख हम सभ टाइप करिते छी। जिनकर रचना टाइप करैत छी ताहिमे स्वतः रूपसँ टाइप केनिहारक वर्तनी आबि जाइत छै। ई संकट लेखक वा कि संस्था दूनू लेल बराबर अछि। खएर पहिने कहलहुँ जे संकटसँ बेसी समर्थन अछि तँइ आइ पहिलसँ लऽ कऽ दसम विशेषांक धरि पहुँचलहुँ हम। निश्चिते समर्थन बेसी भेटल हमरा। जखन कि विदेहक ई 10 विशेषांक केर अलावे आनो विषयपर विशेषांक प्रकाशित भेल अछि।

3

पाठक जखन एहि विशेषांककेँ पढ़ताह तँ हुनका वर्तनी ओ मानकताक अभाव लगतनि। वर्तनीक गलती जे थिक से सोझे-सोझ हमर सभहक गलती थिक जे हम सभ संशोधन नै कऽ सकलहुँ मुदा ई धेआन रखबाक बात जे विदेह

शुरुएसँ हरेक वर्तनी बला लेखककेँ स्वीकार करैत एलैए। तँइ मानकता अभाव स्वाभाविक। एकर बादो बहुत वर्तनीक गलती रहल गेल अछि जे कि हमरे सभहक गलती अछि। मैथिलीमे किछुए एहन पत्रिका अछि जकर वर्तनी एकरंगक रहैत अछि आ ई हुनक खूबी छनि मुदा जखन ओहो सभ कोनो विशेषांक निकालै छथि तखन वर्तनी तँ ठीक रहैत छनि मुदा सामग्री अधिकांशतः बसिये रहैत छनि। ऐतिहासिकताक दृष्टिसँ कोनो पुरान सामग्रीक उपयोग वर्जित नै छै मुदा सोचियौ जे 72-80 पन्नाक कोनो प्रिंट पत्रिका होइत छै ताहिमे लगभग आधा सामग्री साभार रहैत छनि, तेसर भागमे लेखक केर किछु रचना रहैत छनि आ चारिम भागमे किछु नव सामग्री रहैत छनि। मुदा हमरा लोकनि नव सामग्रीपर बेसी जोर दैत छियै। एकर मतलब ई नहि जे वर्तनीमे गलती होइत रहै। हमर कहबाक मतलब ई जे संपादक-संयोजककेँ कोनो ने कोनो स्तरपर समझौता करहे पड़ैत छै से चाहे वर्तनीक हो कि, मुद्राक हो कि विचारधारक हो कि सामग्रीक हो। हमरा लोकनि वर्तनीक स्तरपर समझौता कऽ रहल छी मुदा कारण सहित। प्रिंट पत्रिका एक बेर प्रकाशित भऽ गेलाक बाद दोबारा नै भऽ सकैए (भऽ तँ सकैए मुदा फेर पाइ लागि जेतै) तँइ ओकर वर्तनी यथाशक्ति सही रहैत छै। इंटरनेटपर सुविधा छै जे बीचमे (इंटरनेटसँ प्रिंट हेबाक अवधि) ओकरा सही कऽ सकैत छी मुदा सामग्रिए बसिया रहत तँ सही वर्तनी रहितो नव अध्याय नै खुजि सकत तँइ हमरा लोकनि वर्तनी बला मुद्दापर समझौता केलहुँ। हमरा लोकनि कएलनि, कयलनि ओ केलनि तीनू शुद्ध मानैत छी, एतेक शुद्ध मानैत छी एकै रचनामे तीनू रूप भेटि जाएत। आन शब्दक लेल एहने बूझू।

उम्मेद अछि जे पाठक विदेहक आने विशेषांक जकाँ एकरा पढ़ताह आ पढ़ि एकर नीक-बेजाएपर अपन सुझाव देताह। विदेहक द्वारा जीवैत लेखक ओ संस्थाक विशेषांक शृखंलामे प्रकाशित भेल आन विशेषांक सभहक लिस्ट एना अछि (एहिठाम जे अंकक लिस्ट देल गेल अछि ताहि अंकपर क्लिक

करबै तँ ओ अंक खुजि जाएत)-

१) अरविन्द ठाकुर विशेषांक ०१ नवम्बर २०१५ अंक १८९

२) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक ०१ दिसम्बर २०१५ अंक १९१

३) रामलोचन ठाकुर विशेषांक ०१ अप्रैल २०२१ अंक ३१९

४) राजनन्दन लाल दास विशेषांक ०१ नवम्बर २०२१ अंक ३३३

५) रवीन्द्र नाथ ठाकुर विशेषांक १५ जून २०२२ अंक ३४८

६) केदारनाथ चौधरी विशेषांक १५ अगस्त २०२२ अंक ३५२

७) प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' विशेषांक ०१ नवम्बर २०२२ अंक ३५७

८) शरदिन्दु चौधरी विशेषांक १५ नवम्बर २०२२ अंक ३५८

९) अशोक विशेषांक १ मइ २०२३ अंक ३६९

१०) रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांक १५ मइ २०२३ अंक ३७०

विदेहक अरविन्द ठाकुर विशेषांक केर पोथी रूप "स्वतंत्रचेता- अरविन्द ठाकुर: व्यक्तित्व-कृतित्व" केर नामसँ प्रकाशित भेल उम्मेद जे भविष्यमे "एम.एस.यू (MSU)-मिथिला स्टूडेंट यूनियनपर केंद्रित एहि विशेषांक केर पोथी रूप सेहो आएत।

ई तँ भेल जे काज हम सभ कऽ सकलहुँ तकर विवरण मुदा किछु एहनो घोषणा छै जे कि हम सभ नै कऽ सकलहुँ जेना २०१६ मे हम सभ परमेश्वर कापड़ि, कमला चौधरी आ वीरेन्द्र मल्लिक विशेषांक केर घोषणा कइयो कऽ

नहि प्रकाशित कऽ सकलहुँ। पाठक एहि घोषणाकेँ एहि लिंकपर देखि सकै छथि- सूचना

बादमे विदेहक "वीरेन्द्र मल्लिक विशेषांक" (जे कि प्रकाशित नै भऽ सकल) लेल वीरेन्द्र मल्लिक जीक साक्षात्कार जे नबोनारायण मिश्रजी से विदेहक ३३७म अंकमे प्रकाशित भेल पाठक एकरा एहि लिंकपर पढ़ि सकै छथि- १ जनवरी २०२२ अंक ३३७

4

विदेहक एहि जीवित विशेषांक शृंखलामे किनकर चयन हो ताहि लेल मोटा-मोटी निच्याक किछु बिंदुक पालन कएल जाइत अछि-

१) लगभग पाँच-छह मास पहिनेसँ विदेह अपन पाठककेँ सुझाव देबा लेल लेल सूचना दैत अछि।

२) आएल सुझावमेसँ विदेह मात्र जीबित लेखककेँ चयन करैत अछि। संस्था सेहो वर्तामनमे जीवंत हेबाक चाही।

३) सभ जीवित लेखकक बीचमे हुनकर लेखन एवं आचरणक साम्यता देखल जाइत अछि। जाहि लेखकक लेखन ओ आचरणमे बेसी साम्यता (कम फाँक) भेटैए तेहन छह टा नाम चयनित होइत अछि।

४) छह नाम एलापर ई तुलना कएल जाइत छै जे ई छहो लेखक अथवा संस्थाकेँ रचना लिखबाक वा समाजिक काज केलाक एवजमे समाजसँ की भेटलनि।

५) जिनका सभसँ कम भेटल बुझाइत अछि ताहि तीन लेखक-संस्थाकेँ अगिला चरण लेल राखि लैत छी।

६) एहि तीन चयनित जीबित लेखकक वा संस्थाक रचना, काज, हुनक उद्येश्य आदिक बीचमे परस्पर तुलना कएल जाइत अछि।

७) अंतिम रूपसँ विदेह द्वारा एकटा नाम चुनि सालक अंतमे घोषणा कएल जाइत अछि आ नियत समयपर ई विशेषांक निकालबाक प्रयास करैत छी।

प्रश्न उठि सकैए जे कि उपरक नियम एहन छै जाहिमे अंतिम रूपसँ सभ सुयोग्य जीवित लेखक केर चयन समयपर भ्ऽ जेतनि? तऽ एकर उत्तर छै नै। विदेहक पाठक लग सेहो अपन सीमा छनि। मुदा अही सीमाक संगे हमरा सभकेँ अपन बेस्ट देबाक छै आ मैथिली लेल एकटा एहन रस्ता बना देबाक छै जाहिसँ आबए बला 500-600 बर्खक साहित्य विदेहक लीकसँ प्रेरणा पाबए। अही विचारक संग विदेह ओहन जीवित लेखकपर अपन धेआन सेहो केंद्रित कऽ रहल अछि जे कि सुयोग्य छथि मुदा जिनकापर विदेहक विशेषांक कोनो कारणवश नहि प्रकाशित भऽ सकल। एकर नाम भेल विदेहक "नित नवल सिरीज"। एहि नव विचारक मुख्य बिंदु एना अछि-

1) विदेहक संपादक गजेन्द्र ठाकुर एकटा कोनो जीवित लेखक वा कलाकारपर एकाग्र आलोचना करता मने ओहि लेखक केर उपल्बध सभ साहित्यपर। एहि पोथीक भाषा मैथिली अथवा अंग्रेजी कोनो एक भाषामे रहत। एहि पोथीक पहिल रूप ई-बुक केर रूपमे आएत आ प्रयास रहत जे एकर प्रिंट सेहो आबए जे कि परिस्थितिपर निर्भर करतै।

2) लेखक वा कलाकार केर चुनाव संपादक अपन रुचि वा विदेह टीमक रुचि केर हिसाबें करता।

3) एहिमे ओहने लेखक वा कलाकार केर चयन संभव हएत जिनकर उपल्बध हरेक पोथीक PDF रूपमे विदेहक माध्यमसँ सार्वजनिक भेल छनि।

कलाकार लेल यूट्यूब एवं आन साइट सेहो मान्य हेतै।

4) एहि परियोजनाक लेल चयनित लेखक वा कलाकारपर काज संपादक केर समय केर अनुसारे हेतै। तँइ एकर समय सीमा कहब संभव नहि। नित नवल सिरीजमे:-

(i) सुभाष चंद्र यादवपर केंद्रित "नित नवल सुभाष चंद्र यादव",

(ii) राजदेव मंडलपर केंद्रित "Rajdeo Mandal- Maithili Writer" आ

(iii) जगदीश प्रसाद मण्डल केन्द्रित "Jagdish Prasad Mandal- Maithili Writer" प्रकाशित भेल अछि। पहिल दुनू पोथीक लोकार्पण ३१ दिसम्बर २०२२ कैं १११म सगर राति दीप जरय मे कएल गेल। तेसर पोथीक लोकार्पण २५ मार्च २०२३ कैं ११२ म सगर राति दीप जरय मे कएल गेल।

ऐ शृंखलामे-:

(iv) "नित नवल दिनेश कुमार मिश्र" आ

(v) "नित नवल सुशील" जारी अछि आ दूनूक पोथी रूप जल्दिये आएत।

ऐ शृंखलाक आगाँक घोषणा लेल http://videha.co.in/investigation.htm देखैत रही।

5) ऊपरक विशेषांक आ नित नवल सिरीजक केर अतिरिक्त विदेहक आन विशेषांक केर सूची एना अछि (अंकक लिस्ट जे देल गेल अछि ताहि अंकपर क्लिक करबै तँ ओ अंक खुजि जाएत)-

१) हाइकू विशेषांक १२ म अंक, १५ जून २००८

२) गजल विशेषांक २१ म अंक, १ नवम्बर २००८

३) विहनि कथा विशेषांक ६७ म अंक, १ अक्टूबर २०१०

४) बाल साहित्य विशेषांक ७० म अंक, १५ नवम्बर २०१०

५) नाटक विशेषांक ७२ म अंक १५ दिसम्बर२०१०

६) समीक्षा विशेषांक

७) नारी विशेषांक ७७म अंक ०१ मार्च २०११

८) अनुवाद विशेषांक (गद्य-पद्य भारती) ९७म अंक

९) बाल गजल विशेषांक विदेहक अंक १११ म अंक, १ अगस्त २०१२

१०) भक्ति गजल विशेषांक १२६ म अंक, १५ मार्च २०१३

११) गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा विशेषांक १४२ म, अंक १५ नवम्बर २०१३

१२) काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक १६९ म अंक १ जनवरी २०१५

१३) विदेह सम्मान विशेषाक- २००म अक१ १५ अप्रैल २०१६/ २०५ म अक, १ जुलाई २०१६

१४) मैथिली सी.डी./ अल्बम गीत संगीत विशेषांक- २१७ म अंक ०१ जनवरी २०१७

१५) मैथिली वेब पत्रकारिता विशेषांक-३१३म अंक १ जनवरी २०२१

१६) मैथिली बीहनि कथा विशेषांक-२, ३१७ म अंक १ मार्च २०२१

१७) कला-विमर्श विशेषांक (सन्दर्भ- संजू दास, कृष्ण कुमार कश्यप, शशिबाला, एस.सी.सुमन आ श्वेता झा चौधरी)

अहू खंडमे किछु एहनो घोषणा छै जे कि हम सभ नै कऽ सकलहुँ जेना विदेहक "साहित्यिक भ्रष्टाचार विशेषांक" हमरा लोकनि एखन धरि नै प्रकाशित कऽ सकलहुँ अछि। एकर घोषणा हम २०१९ मे केने रही। एहि घोषणाक फेसबुक लिंक देखू।

परिशिष्ट-1

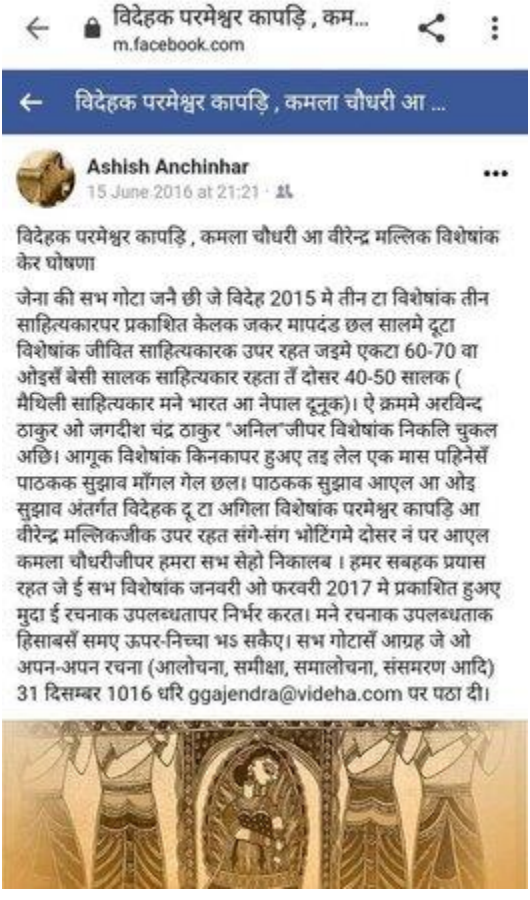
विदेहक परमेश्वर कापड़ि , कम...
m.facebook.com
विदेहक परमेश्वर कापड़ि , कमला चौधरी आ ...
Ashish Anchinhar
15 June 2016 at 21:21 ·
विदेहक परमेश्वर कापड़ि , कमला चौधरी आ वीरेन्द्र मल्लिक विशेषांक केर घोषणा
जेना की सभ गोटा जनै छी जे विदेह 2015 मे तीन टा विशेषांक तीन साहित्यकारपर प्रकाशित केलक जकर मापदंड छल सालमे दूटा विशेषांक जीवित साहित्यकारक उपर रहत जइमे एकटा 60-70 वा ओइसँ बेसी सालक साहित्यकार रहता तँ दोसर 40-50 सालक (मैथिली साहित्यकार मने भारत आ नेपाल दूनूक)। ऐ क्रममे अरविन्द ठाकुर ओ जगदीश चंद्र ठाकुर "अनिल"जीपर विशेषांक निकलि चुकल अछि। आगूक विशेषांक किनकापर हुअए तइ लेल एक मास पहिनेसँ पाठकक सुझाव माँगल गेल छल। पाठकक सुझाव आएल आ ओइ सुझाव अंतर्गत विदेहक दू टा अगिला विशेषांक परमेश्वर कापड़ि आ वीरेन्द्र मल्लिकजीक उपर रहत संगे-संग भोटिंगमे दोसर नं पर आएल कमला चौधरीजीपर हमरा सभ सेहो निकालब । हमर सबहक प्रयास रहत जे ई सभ विशेषांक जनवरी ओ फरवरी 2017 मे प्रकाशित हुअए मुदा ई रचनाक उपलब्धतापर निर्भर करत। मने रचनाक उपलब्धताक हिसाबसँ समए ऊपर-निच्चा भऽ सकैए। सभ गोटासँ आग्रह जे ओ अपन-अपन रचना (आलोचना, समीक्षा, समालोचना, संसमरण आदि) 31 दिसम्बर 1016 धरि ggajendra@videha.com पर पठा दी।

परिशिष्ट-2

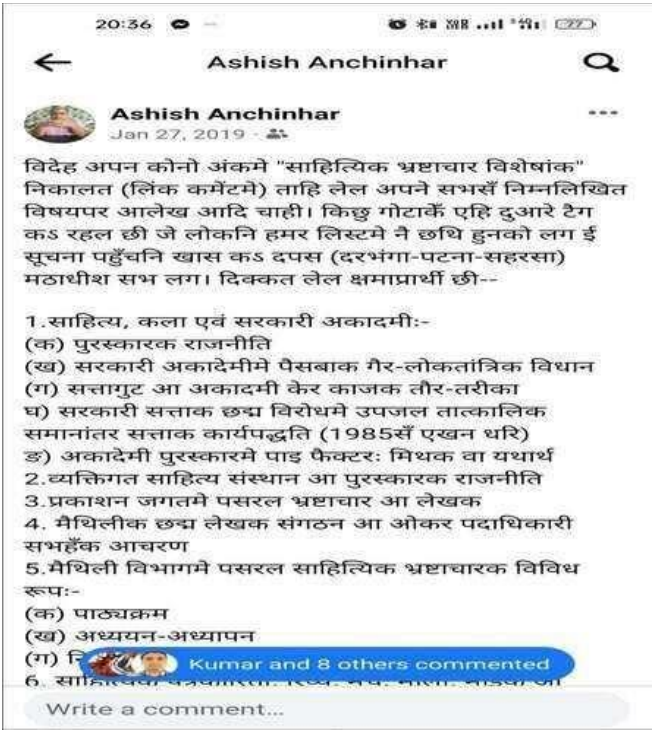

20:36

Ashish Anchinhar

Ashish Anchinhar

Jan 27, 2019

विदेह अपन कोनो अंकमे "साहित्यिक भ्रष्टाचार विशेषांक" निकालत (लिंक कमेंटमे) ताहि लेल अपने सभसँ निम्नलिखित विषयपर आलेख आदि चाही। किछु गोटाकेँ एहि दुआरे टैग कऽ रहल छी जे लोकनि हमर लिस्टमे नै छथि हुनको लग ई सूचना पहुँचनि खास कऽ दपस (दरभंगा-पटना-सहरसा) मठाधीश सभ लग। दिक्कत लेल क्षमाप्रार्थी छी--

1.साहित्य, कला एवं सरकारी अकादमी:-
(क) पुरस्कारक राजनीति
(ख) सरकारी अकादेमीमे पैसबाक गैर-लोकतांत्रिक विधान
(ग) सत्तागुट आ अकादमी केर काजक तौर-तरीका
घ) सरकारी सत्ताक छद्म विरोधमे उपजल तात्कालिक समानांतर सत्ताक कार्यपद्धति (1985सँ एखन धरि)
ङ) अकादेमी पुरस्कारमे पाइ फैक्टर: मिथक वा यथार्थ
2.व्यक्तिगत साहित्य संस्थान आ पुरस्कारक राजनीति
3.प्रकाशन जगतमे पसरल भ्रष्टाचार आ लेखक
4. मैथिलीक छद्म लेखक संगठन आ ओकर पदाधिकारी सभहँक आचरण
5.मैथिली विभागमे पसरल साहित्यिक भ्रष्टाचारक विविध रूप:-
(क) पाठ्यक्रम
(ख) अध्ययन-अध्यापन
(ग) नि

Kumar and 8 others commented

Write a comment...

परिशिष्ट-3

विदेह अपन कोनो अंकमे "साहित्यिक भ्रष्टाचार विशेषांक" निकालत (लिंक कमेंटमे) ताहि लेल अपने सभसँ निम्नलिखित विषयपर आलेख आदि चाही।

1.साहित्य, कला एवं सरकारी अकादमीः-

(क) पुरस्कारक राजनीति

(ख) सरकारी अकादेमीमे पैसबाक गैर-लोकतांत्रिक विधान

(ग) सत्तागुट आ अकादमी केर काजक तौर-तरीका

घ) सरकारी सत्ताक छद्म विरोधमे उपजल तात्कालिक समानांतर सत्ताक कार्यपद्धति (1985सँ एखन धरि)

ङ) अकादेमी पुरस्कारमे पाइ फैक्टरः मिथक वा यथार्थ

2.व्यक्तिगत साहित्य संस्थान आ पुरस्कारक राजनीति

3.प्रकाशन जगतमे पसरल भ्रष्टाचार आ लेखक

4. मैथिलीक छद्म लेखक संगठन आ ओकर पदाधिकारी सभहँक आचरण

5.मैथिली विभागमे पसरल साहित्यिक भ्रष्टाचारक विविध रूपः-

(क) पाठ्यक्रम

(ख) अध्ययन-अध्यापन

(ग) नियुक्ति

6. साहित्यिक पत्रकारिता, रिव्यू, मंच, माला, माइक आ लोकार्पणक खेल-तमाशा

7.लेखक सभहँक जन्म-मरण शताब्दी केर चुनाव , कैलेंडरवाद आ तकरा पाछूक राजनीति

8.दलित एवं लेखिका सभहँक संगे भेद-भाव आ ओकर शोषणक विविध तरीका

उपरक विषयक अतिरिक्त जँ कियो साहित्यिक भ्रष्टाचारक कोनो नव विषयपर लिखए चाहथि तँ ओकरो स्वागत रहत।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.२.एम.एस.यू. क संक्षिप्त परिचय

एम.यू .एस. क संक्षिप्त परिचय

एहि विशेषांकसँ पहिने विदेह मिथिला स्टूडेंट यूनियन केर रिपोर्ट २०१७ मे छपने छल जे कि बाढ़िमे ओकरा द्वारा कएल गेल काजपर छल। पाठक एकरा एहि लिंकपर पढ़ि सकै छथि- विदेह १५ अगस्त २०१७ अंक २३२

एहिठाम प्रस्तुत अछि "मिथिला स्टूडेंट यूनियन" केर संक्षिप्त परिचय। एहि परिचयक अधिकांश तथ्य सार्वजनिक अछि जकरा एहिठाम अपना अनुरूप प्रस्तुत केलहुँ अछि। एहि संस्थाकेँ "एम.एस.यू वा MSU केर नामसँ सेहो जानल जाइए। नामपर क्लिक केने क्रमशः एकर विकीपीडिया आ वेबसाइट खूजत। मिथिलावादी पार्टी नामक संस्थाकेँ MSU नैतिक समर्थन दैए।

चित्र- 1

चित्र- 2

स्थापना- मार्च- 2015

संस्थापक सदस्य- अनूप मैथिल, रौशन मैथिल, नितीश कर्ण, राजा राय, कमलेश मिश्रा

वृति- लाभरहित आ गैर राजनीतिक छात्र संगठन

उद्देश्य- मिथिला-मैथिलीक सर्वांगीण विकास

उपस्थिति- बिहार एवं देशक प्रमुख राज्य (मुख्यालय-दिल्ली)

प्रतीक रंग एवं वस्त्र- पीयर रंग, पियरका टी शर्ट-गमछा, पीयर सलवार सूट-नूआ

MSU सँ संबंधित आन चित्र जे कि विभिन्न अवसरक अछि आ विभिन्न माध्यमसँ लेल गेल अछि-

मिथिलावादी पार्टी
नव संकल्प नव विकल्प
mithilawadiparty.com
/MPartyOfficial
| 9431404612

चित्र- 3

चित्र- 4

#MSU_DEMANDS_MOB
MSU
मिथिला स्टूडेंट यूनियन
!! एक डेग, विकास लेल !!
लॉन्ग मार्च मिथिला विकास बोर्ड के लेल
Email : mithilastudentunion@gmail.com
Website : www.mithilastudentunion.com
Shot on OnePlus

चित्र- 5

चित्र- 6

चित्र- 7

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.३.चंदना दत्त- MSU

चंदना दत्त

MSU

"मिथिला स्टूडेंट यूनियन" मिथिलाक जागरुक विद्यार्थी सभहक संगठन अछि जे सदिखन निःस्वार्थ भावनासँ मिथिलाक समस्या संग ठाढ़ रहैत अछि। MSU केर स्थापना २०१५ मे भेल। तखनसँ अनवरत ई संगठन अनेक समस्याक समाधान लेल संगठित रूपसँ अपन अवाज बुलंदीसँ उठा रहल अछि। मधुबनी, दरभंगा, पट्ना दिल्लीमे मिथिला राज्य लेल अपन अवाज दिल्ली धरि पहुँचा रहल अछि।

बाढ़ पीड़ित सहायता, रक्तदान शिविर, दरभंगामे एयरपोर्टक सुचारु संचलान हेतु, मिथिला डेवलेपमेंटक बात, चिन्नी मिलक फेरसँ संचालन, नैंसी-प्रद्युम्न हत्याकांड लेल भेल आन्दोलनमे MSU सक्रिय रूपसँ काज केलक। MSU सदिखन क्षेत्र एवं छात्रह हितमे ठाढ़ रहैत अछि।

मिथिलावादी पार्टी एकर दोसर रूपमे ठाढ़ भेल अछि जकर सहयोगसँ पंचायत चुनावमे कतेक मुखिया-सरपंच बनल छथि। दलित-पिछड़ा संवर्धन यात्रा MSU निकालि रहल अछि।

MSU केर एकैटा उद्येश्य अछि जे अपन क्षेत्र आ छात्रक हितमे काज करैत रही। जाहिमे मिथिलाक चहुँमुखी विकास, सांस्कृतिक धरोहर आ पर्यटन स्थल केर विकास, अन्यायक विरुद्ध पीड़ित सहायता, अपन क्षेत्रमे रोजगार-स्वरोजगार आदि प्रमुख अछि। MSU एकटा गैर राजनीतिक छात्र संगठन अछि आ अपन उद्येश्यमे लगातार सफल भऽ रहल अछि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.४.हिमकर भारद्वाज- "एम.एस.यू (MSU)-मिथिला स्टूडेंट यूनियन"सँ "मिथिलावादी पार्टी" धरि

हिमकर भारद्वाज

"एम.एस.यू (MSU)-मिथिला स्टूडेंट यूनियन"सँ "मिथिलावादी पार्टी" धरि

बहुत दुखदायी आ खीज भरल काज होइत छै जखन अहाँक कल्पनाक फ्रेम बहुत पैघ हो आ अहाँकेँ स्टाम्प साइज फोटो दऽ कहल जाए जे फोटो तेना कऽ लगाउ जे छवि दूरेसँ देखार भऽ जाए। हमरा नजरिमे मिथिला-मैथिली आन्दोलनक यथार्थ आ कल्पनामे किछु एहने सन अंतर छैक।

जून मासक पहिल सप्ताहमे मिथिलावादी पार्टीक राष्ट्रीय महासचिव उग्रनाथ भैयाक फोन आएल जे संगठन सर्वसम्मतिसँ निर्णय लेलक अछि जे अहाँ पार्टीक प्रदेश अध्यक्षक जिम्मेदारी ली। हम साफ-साफ मना करैत रहलियनि। कोरोना आ ओकर प्रभावक कारण कारोबार एकदम ठप्प भऽ गेल रहए। आर्थिक तंगीक बीच एहन निर्णय लेब बहुत कठिन आ सच पूछी तँ आत्मघाती सेहो होइत। भविष्यमे अपना माटि लेल किछु करबाक अवसरकेँ देखैत राति भरि तनावमे रहलहुँ। भोरे पहिलुक चाहक संग पत्नी (कविता) कहलनि- बाबू

(मोहन भारद्वाज) लग की रहनि? सभ दिन दिक्कतेमे रहलाह सोचू ओहो जँ इएह सोचतथि तँ हमरा अहाँकेँ के चिन्हैत। संभावित डर एवं आशंकाकेँ बीच ओ अखबार दिस नजरि देने रहलीह आ चाह पिबैत रहलीह। हमरा लागल जेना जकड़न खुजि गेल हो। चाह पीलाक बाद पहिल काज कएल जे उग्रनाथ भैयाकेँ स्वीकृतिक मैसेज कऽ देल।

कोनो योजनापर काज करबासँ पहिने रिसोर्स मैपिंग जरूरी होइत छै। से हम पहुँचि गेलहुँ मधुबनी कार्यालय। जखन हम पहुँचलहुँ ओतए तँ एम.एस.यू (MSU)-मिथिला स्टूडेंट यूनियन केर कोनो नीतिगत मामिलापर बैठक जारी रहए। एगारह बजेसँ शुरू भेल मीटिंग चारि बजे साँझमे समाप्त भेल। वैचारिक मतभिन्नताक बावजूद समाजिक जिम्मेदारी कतेक महत्वपूर्ण छैक से आइ देखबामे आएल। जखन एकटा गैर राजनीतिक छात्र संगठनकेँ विधानसभा चुनावमे कोन रूपें अपन भूमिका तय करबाक चाही ताहिपर विमर्श भऽ रहल छल।

हमरा सभहक समझ चुनाव पूर्व सांगठनिक स्तरपर विमर्श लेल दू टा मुख्य विषय रहए- पहिल जे मिथिलावादी पार्टीक मूल संगठन एम.एस.यू (MSU)-मिथिला स्टूडेंट यूनियन जे कि घोषित रूपसँ एकटा गैर राजनीतिक संगठन छै ओकर विधान सभा चुनावमे कोन स्तरपर आ कतेक भूमिका होइक, दोसर- जे एम.एस.यू (MSU)-मिथिला स्टूडेंट यूनियन केर साथी विधानसभा चुनावमे अपन उम्मेदवारी प्रस्तुत करथि वा कि नहि।

अइ विषयपर कोनो संशय नहि जे मिथिलावादी पार्टीक मूल आधार एम.एस.यू (MSU)-मिथिला स्टूडेंट यूनियन एकटा मजगूत छात्र संगठन छै, जकरा दमपर आ जकरा काजक आधारपर मिथिलावदी पार्टीक परिकल्पना कएल गेल। मिथिलावादी पार्टीकेँ एकटा राजनीतिक पार्टीक

रूपमे मान्यता तँ भेटल परंतु चुनाव काल धरि एकर कोनो सांगठनिक आकार-आधार नहि लेने रहए।

मिथिलावादी पार्टीक राष्ट्रीय अध्यक्ष हुकुमदेव यादव, महासचिव स्क्रीनिंग कमिटीक एग्यारह सदस्य, एम.एस.यू (MSU)-मिथिला स्टूडेंट यूनियनक राष्ट्रीय अध्यक्ष, महासचिव, संगठन मंत्री,, जिला अध्यक्षक संग कएक दिन कएक रांउड बैसारक बाद तय भेल जे पंचायत, प्रखंड, जिला आ विधानसभा स्तरपर चुनाव प्रभारीक संग बूथ प्रभारी तक पूरा चुनाव प्रचार आ राजनीति एम.एस.यू (MSU)-मिथिला स्टूडेंट यूनियन केर साथी मिथिलावादी पार्टी आ उम्मेदवारक कोर टीमक संग समन्वय बैसा कऽ निमाहता।समन्वय स्थापित करबाक पहिल जिम्मेदारी प्रखंड अध्यक्ष आ विधानसभा प्रभारीकेँ देल गेल। संगहि बहुत विमर्शक बाद ईहो निर्णय लेल गेल जे ई पद सभ विधानसभा चुनावक मतगणनाक दिन स्वतः समाप्त भऽ जाएत। हमरा सभहक दोसर जे विचारणीय विषय रहए ओहिपर निर्णय करबामे बहुत समय नहि लागल। एम.एस.यू (MSU)-मिथिला स्टूडेंट यूनियन एकटा छात्र संगठन छैक, एकटा संगठनक कार्यशैली आ एकटा राजनीतिक दलक कार्यप्रणालीमे बहुत अंतर होइत छै संगहि संग छात्र संघ चुनाव आ विधानसभा चुनावमे सेहो बहुत फर्क छै। तँइ अनुभवकेँ देखैत आ संगठनक साथी सभहक आर्थिक स्थितिकेँ देखैत सहज निर्णय भऽ गेल जे हमरा सभ चुनाव लड़बाक स्थितिमे नहि छी आ ने अनुभव अछि तँइ विधानसभा चुनावसँ अनुभव लऽ प्राथमिक स्तरक यानी पंचायत स्तरक चुनावमे हम सभ अपन दावेदारी प्रस्तुत करब ताकी संगठनकेँ जमीनी आ राजनीतिक दावेदारी सेहो मजगूतीक संग ठ़ाढ़ भऽ सकए।

जखन एहि दुनू विषयपर निर्णय भऽ गेल तखन नव समस्या ठाढ़ भेल जे विधानसभा चुनावमे मिथिलावदी पार्टी दिससँ के? हम सभ सैद्धांतिक रूपें

अहि बातपर सहमत रही जे हम सभ ओ उम्मेदवारक समर्थन करब जे कोनो मिथिला-मैथिलीसँ जुड़ल पार्टी दिससँ ठाढ़ होथि आ हुनकर प्राथमिकतामे पहिलुक नम्बरपर मिथिला-मैथिली होइन। दोसर हमरा सभहक सैद्धांतिक समर्थनक आधारपर ओ उम्मेदवार रहथि जे पहिनेसँ हमरा सभहक संगठनकेँ नैतिक समर्थन करैत रहलाह। अति विमर्शक दौरान फेर 'किंतु' लागल जे कि हम सभ ओहन कोनो दलक उम्मेदवारकेँ समर्थन करब जे पहिने हमरा सभकेँ सभ तरहे मदति करैत रहलाह अछि? एकर उत्तर आएल- जँ ओ निर्दलीय छथि तखने अन्यथा नहि।

समर्थन माने की? सामान्य नियम छैक जे विचारधारापर सहमति आ चुनाव प्रबंधनमे एक-दोसराकेँ सहयोग। विशाल छात्र संगठन हेबाक कारणे मिथिला-मैथिली संगठन तँ छोड़ू बहुत रास राज्य स्तरीय संगठन सेहो हमरा सभहक सहयोग चाहि रहल रहए। बहुत एहनो उम्मेदवार भेटलाह जे कोनो पैघ दलसँ संबंद्ध छथि, ओ कतबो मूल्य दऽ टिकट चाहि रहल छलाह मुदा टिकट नहि भेटलनि तँ हुनक इच्छा जे हम सभ हुनका निर्दलीय रूपमे समर्थन कऽ दियौन। इएह मंशा रहैत छलनि। हुनका अनुसारे समर्थन माने- ओ हमर दलक सदस्यता नहि लेताह, बैनरपर नाम नहि देताह। हमरा दलकेँ कोनो तरहक आर्थिक सहयोग नहि करताह ताहिपरसँ हम सभ, छात्र साथी हुनका लेल मुफ्तमे काज कऽ दियौन। दू मास मोटरसाइकिलमे तेल दिया भोरसँ साँझ धरि भूखे खटब। एकटा छात्र लेल काज करब कोना संभव छैक से हुनका सोचमे नहि रहनि। जखन कि ओ ओहि दलसँ पचासो लाख दऽ टिकट किनबा लेल तैयार छलाह, जाहि दल लेल ओ पछिला पाँच बर्खसँ ओ भीड़ जुटबैत रहालह, झंडा ढोइत रहलाह।

एहि मानसिकतापर जखन हम सोचब शुरू केलहुँ तँ लागल जेना हम मिथिला-मैथिली आंदोलनीकेँ ओ हँसेरी बुझैत छथि। आ बातो सही छै किएक तऽ

मिथिलाक नामपर हमर पूर्वज सेन्टिमेंट जगा बेरपर कखनो भाजपा तँ केखनो कांग्रस वा कखनो आने दल संग सौदा कऽ मिथिलाक आन्दोलनकेँ दमित कऽ दैत छथिन।

कोनो राजनैतिक संगठनक विस्तार एवं आयु एहि बातपर निर्भर करैत छैक जे ओ वैचारिक रूपसँ कतेक मजगूत संगठन अछि। हमरा सभकेँ एहि विषयपर विचार करऽ पड़त जे भाजपा, आर.जे.डी, कांग्रेस, जे.डी.यू सभ राजनीतिक दलकेँ पिछलग्गू भऽ मिथिला विकासक परिकल्पना करी वा मिथिलामे मिथिला लेल मिथिलावादी विचारधाराकेँ आगू बढ़ाबी। कोनो चुनाव लड़बा लेल जाहि रूपमे धनक उपयोग भऽ रहल छै या कही तऽ महत्व बढ़ि रहल छै से दिनानुदिन लोकतांत्रिक व्यवस्था लेल बेसी खतरनाक भेल जा रहल छै। छोट दल धनक अइ बड़का खेलकेँ खेलबामे सक्षम नहि छैक। एहना स्थितिमे हमरा सभ लेल रस्ता आर दुरूह लागल। कएक टा एहन क्षेत्रीय दल हमरा सभहक सांगठनिक तागतकेँ देखैत समझौता करबा लेल पहल केलक जकरा पाइ तँ खूबे रहै आ सीटक हिसाबसँ संगठनकेँ मनमाफिक पाइ सेहो देबा लेल तैयार रहए मुदा ओ अपना सुविधानुसार हमरा सभकेँ विधानसभा क्षेत्रक चयन कऽ उम्मेदवार ठाढ़ करबा लेल दबाब देबाक मानसिकतामे सेहो रहए, जाहिपर हम सभ तैयार नहि। अंततः बात दू-तीन रांउडसँ आगू नहि बढ़ि सकल। खएर धन बला विषय अनुउत्तरिते रहि गेल। हमर किछु साथिक मानब रहनि जे पार्टी नव अछि, चुनाव चिह्न नहि अछि तऽ एहना स्थितिमे हमरा सभकेँ पाइ बला उम्मेदवारक समर्थनमे आगू एबाक चाही आ पाइक डिमांड करबाक चाही ताकी अहिबेर नहि तँ अगिला बेर लेल मजगूत आधार तैयार भऽ सकए। अधिकतर साथी अइ विचारसँ असहमत रहथि।

दोसर पक्षकेँ मानब रहनि जे हमरा ओहन निर्दलीय उम्मेदवारक समर्थन करबाक चाही जे शुरूसँ हमरा सभहक संग रहल छथि आ निर्दलीय उम्मेदवारी

प्रस्तुत कऽ रहल छथि चाहे ओ धनवान होथि वा गरीब। हमरा सभ दोसर पक्षपर सहमति बना लेलहुँ। कतहुँ-कतहुँ अनुभवजन्य गलतियो भेल। मुदा.... अइ कम्रमे कएक गोटे फोनसँ चिन्ता जाहिर केलनि जे अहाँक टीमक सदस्य जँ पाइ बला संग लगातार दू मास काज करता तऽ स्वाभाविक तौरपर हुनकर झुकाव ओहि दिस भऽ जेतनि। चिन्ता स्वाभाविक रहनि मुदा सच इएह रहै जे लोकसभा चुनावमे तऽ हमरा सभहक साथी व्यक्तिगत तौरपर अलग-अलग दलक उम्मेदवारक संग छलखिन तकरा बादो ओ आइ धरि हमरा सभहक संग छथि आ संगे-संग अपना क्षेत्रक उचित मुद्दाक पक्षमे लड़ियो रहल छथि। इएह एहि संगठनक अनुशासन ओ ट्रेनिंग छै।

एक विधानसभा क्षेत्रमे औसरन चालीस पंचायत होइत छैक। एक पंचायतमे औसतन तीन गाम। एहि बेर पछिला बेरक मुकाबले ४५ प्रतिशत बेसी बूथ बनाएल गेल रहै। मॉक टेस्ट टाइम आ रियल भोटिंग टइमकेँ हिसाबसँ देखू तँ पाँच बजे भोरसँ सात बजे साँझ धरि पोलिंग बूथपर रहबाक चाही। यानी हरेक बूथपर दू पोलिंग एजेंट। बाहर पर्ची काटबा लेल कमसँ कम चारि आदमी यानी जँ हम एक विधानसभा मात्र खजौलीक बात करी तऽ ४८३ बूथ यानी ४८३X६=२८९८ कार्यकर्ताक भोटक दिन जरूरति छै। एकरा अतिरिक्त वार्डसँ अपना भोटरकेँ मोटिभेट कऽ पोलिंग बूथ धरि पहुँचेबाक लेल अलगसँ कार्यकर्ता आ साधनक जरूरति होइत छै से अलग। अतेक बर्खसँ मिथिला-मैथिलीक नामपर चुनावी राजनीतिक करऽ बला नेता सभ अइ मूल बातपर किएक नहि धेआन देलखिन, किएक ओतेक पुरान संस्था सभ जेबी संस्था बनि कऽ रहि गेल अछि। कारण तकबा लेल कोनो समुद्र मंथन करबाक जरूरति नै छैक। एक नजरिमे अंदाज भऽ जाएत जे हिनका लोकतांत्रिक व्यवस्थाक मध्यमे मिथिलाक बदलावकेँ कोनो इच्छा नहि छनि। हिनक उद्येश्य मिथिला-मैथिलीक नामपर चंदा उगाहब, अपन नाम चमकाएब बस अतबे छनि।

मिथिलावादी पार्टीक मूल छात्र संगठन एम.स.यू लग ई तागति छैक जे ओ अपना साथी कार्यकर्ताक दमपर हर बूथपर अइसँ बेसी संख्यामे कार्यकर्ता ठाढ़ कऽ सकैत अछि। चुनाव जतबा पैसाक खेल छै ततबा माइंड गेम सेहो। हमरा संगठनक इच्छा रहए जे पार्टी भने दस दिनक पुरान हो, चुनाव चिह्न नहि भेटल हो मुदा जँ हर बूथपर हम सभ पोलिंग एजेंट दऽ सकलहुँ तँ आन पार्टी सभकेँ मनोबलपर प्रभाव जरूर पड़तै, आगू ओकर राजनीति सेहो प्रभावित हेतै। मतलब जाहि मकिथिलासँ जितलाक बादो ओतुक्का जनप्रतिनिधि ओतुक्का सुपर स्ट्रक्चर वा स्ट्रक्चरक विकासपर धेआन नहि दैत छलाह हुनका आब धेआन देबऽ पड़तनि। आ से चुनावक बाद सांकेतिक रूपसँ देखबामे सेहो आएल। एतेक संख्यामे अइसँ पहिने कहियो मैथिलीमे शपथ नहि लेल गेल रहए। भने हमर फेसबुकिया मित्र सभ केखनो जातीय आधारपर आ केखनो दलगत आधारपर आँकड़ा प्रस्तुत कऽ ओकरा कमतर करबाक चेष्टा किएक ने केने होथि।

हम सभ आठो विधानसभा क्षेत्रमे अपन सांगठनिक तागत देखेबामे सक्षम भेलहुँ। भने भोटकेँ अपना दिस अनबामे बहुत सफल नहि रहलहुँ मुदा सभ बूथपर हम सभ कार्यकर्ता देलियै। हम, हमर राष्ट्रीय अध्यक्ष सुजित यादव, रत्नेश्वरजी आ पूरा टीम पछिला चुनाव सभहक आँकड़ा लऽ कऽ बैसल रही। हम सभ आँकड़ा विश्लेषणक आधारपर अइ निष्कर्षपर पहुँचलहुँ जे लगभग तीन हजारसँ पाँच हजार भोट सुप्त अवस्थामे मिथिला-मैथिलीक नामपर लगभग सभ विधानसभामे छै। इतिहासक विश्लेषण भविष्यक मार्ग निर्माणमे बहुत सहायक होइत छैक। आब हम सभ अइ विषयपर चर्चा करब शुरू केलहुँ जे अइ आधार भोटसँ आगू बढ़ेबा लेल कोन रस्ता अपनाएल जाए।

वर्तमानक लगभग सभ मिथिला-मैथिली संस्था समान्यतः दू बिंदुपर काज कऽ रहल अछि एकटा भाषा आ दोसर मिथिला राज्य। हमरा सभकेँ अइ बिन्दुसँ

कनेको असहमति नै अछि जे मिथिला भाषाक विकास हेबाक चाही आ हमरा सभकेँ अपन सांस्कृतिक आ भूगोलक संग राज्य भेटबाक चाही। अइपर कोनो असहमति भइयो ने सकैत अछि। चुनावक क्रममे बहुतो लोकसँ गप्प भेल। किछु गोटेक आरोप रहनि जे अहाँक संगठन मैथिली भाषाक विकास लेल बहुत एग्रेसिव नहि अछि, मिथिला राज्यक माँग प्रमुखता संग किएक नहि रखैत अछि।

हमरा सभ अपना संगठनमे बौद्धिक विलासितासँ बेसी बौद्धिक विज्ञानिकतापर जोर देलियै। हमरा सभकेँ वुझा गेल जे मैथिली भाषाक सहारे बहुत विशाल संगठन ठाढ़ नहि कऽ सकैत छी। १९१०क मैथिलक महासभाक माध्यमसँ मैथिलक जातीय आधारपर तोड़बाक जे प्रयास शुरू भेल ओ तथाकथित संस्कृतनिष्ठ प्रांजल मैथिलीक सहारे आइयो चलि रहल अछि। वर्तमान राजनीतिक दल जाति-धर्मक आधारपर हमरा सभहक समेकित प्रतिरोधक क्षमताकेँ कम तँ कइए रहल अछि संगहि अपन गोटी लाल करबामे सेहो सफल भऽ रहल छथि।

हमरा सभहक समाज जातीय आधारपर बाँटल अछि आ तँइ कही तँ भाषाई आधारपर सेहो। हमरा सभहक जातीय विषमता प्रत्यक्ष रूपें भाषाई विषमताकेँ सेहो बढ़ाबा दैत रहल अछि। तँइ हमरा सभहक संगठन ई मानैत अछि जे विभिन्न जातीय स्वरूप बला मिथिला समाजकेँ अपन गौरवशाली भाषा-सांस्कृतिक आधारपर एक सूत्रमे बान्हल जेबाक चाही। हम सभ अपना संगठनमे अइ विषमताकेँ खत्म करबाक जे प्रयास शुरू कएल ओकर साकारात्मक परिणाम सामने आबि रहल अछि। हम सभ अपना संगठनक साथीकेँ सदैव अइ बात लेल प्रेरित करैत छियनि जे ओ सार्वजनिक रूपसँ वा अपना बीच सामान्य चर्चाक दौरान अपन स्थानीय बोलपर कायम रहथि। यानि ओ अपना घरमे जाहि टोन आ शैलीमे गप्प करै छथि सएह टोन आ शैली

सार्वजनिक भाषण वा गप्प-सप्पमे सेहो जारी राखथि। तखने हम सभ साथी जिनकर जातीय आधार अलग-अलग छनि ओहि अइ पुरातनपंथी-दकियानूसी ब्राह्मणक भाषा मैथिली मानसिकतासँ दूर हेताह आ स्वीकार करता हजे पासवानोक भाषा मैथिली, सहरसोक भाषा मैथिली, बेगूसरायोक भाषा मैथिली छै। आ फेर स्वतः भाषाई आधापर एकसूत्रमे बान्हल चलि जेताह। अहिना सांस्कृतिक तौरपर सेहो हम सभ काज कऽ रहल छी। कएक टा क्षेत्रीय गायक-गायिकाकेँ हम सभ ओकर अपन गायन शैली आ ओ सभ सफल भऽ रहल छथि। आ हम सभ एक भऽ रहल छी। भने अइ प्रयासकेँ व्यापक रूपें देखार हेबामे समय लागत परंतु हएत जरूर।

मिथिला भाषा आन्दोलन हो वा राज्य आन्दोलन कोनो आन्दोलन ताबत सफल नहि भऽ सकैत अछि जाबत एकटा स्पष्ट वैज्ञानिक सोचक संग मजगूत संगठनक निर्माण नहि होयत। कोनो आन्दोलन अपन समाजिक मान्यता तखने पबैत अछि जखन ओकर कोनो कानूनी आधार हो, कानूनी रूपसँ जे अधिकार अइ ओकर व्यावहारिक रूपें मान्यता सेहो भेटैक इएह सरकार दिससँ सेहो अपेक्षा अछि।

पहिनेसँ आ एखनो शिक्षा नीति त्रिभाषा फार्मूलापर आधारित अछि। व्यावहारिक तौरपर हम सभ अनेकानेक रूपमे सरकारसँ माँग तऽ कइए रहल छी जे मैथिली माध्यमसँ पढ़ौनी शुरू हो परंतु हम सभ सांगठनिक रूपसँ ई निर्णय कएल जे स्कूल खुजलाक बाद सभ पंचायत यूनिट अपना-अपना पंचायतक आँगनबाड़ी आ प्राथमिक सह उत्क्रमित विद्यालयमे का सिक्षक सभकेँ एहि बातपर सहमत करी जे ओ

G=Guava- अमरूद-लताम

R=Rat-चूहा-मूस

D=Dog-कुत्ता-कुक्कुर

पढ़बाक अइ पद्धतिकेँ अपनाबथि जाहिसँ शूद्ध रूपें त्रिभाषा फार्मूला व्यावहारिक रूपें तत्क्षण लागू भऽ जाए भने बिहार सरकार मानूनी रूपें एकरा एखन धरि स्वीकार नहि केने हो। ओना एहन पुस्तकक खगता हमरा सभकेँ अनुभव भऽ रहल अछि। लोकनृत्य बला पाठमे डांडिया-भाँगड़ा भेटैए झिझिया नहि जे दुखद अछि। हम सभ सदरिकाल अपना खेतिहर संस्कृतिपर गर्व करैत रहलहुँ अछि। माछ-मखान हमरा सभहक संस्कृतिक मुख्य आधार अछि। खेती आ ओहिसँ जुड़ल पाबनि-तिहार हमरा सभहक संस्कृति केर मूल आधार रहल अछि। मुदा हमरा सभ एकटा आधार बना ने तऽ संपूर्ण मिथिलाकेँ एकसूत्रमे बान्हि सकलहुँ आ ने आर्थिक विकास कऽ सकलहुँ। माछ-मखानपर तऽ गर्व करैत छी मुदा पोखरि भरि कऽ मकान बनबैत छी, चाउमिन खा कऽ झिल्ली-कचरी-मुरही, कंसारकेँ छोड़ने जा रहल छी। पटुआक रस्सी छोड़ि प्लास्टिक धेलहुँ तऽ जूट उद्योगपर प्रभाव पड़ल, दलानपर गाए-महिस छोड़लहुँ तऽ सुधा केर दही जगह लेलक। आब तऽ गामक भोजमे बहुतो गोटे नामो लेबा जोगर दही पातपर नहि लैत छथि। जखन कि दही हमरा सभहक संस्कृतिक अभिन्न अंग रहल अछि। हम सभ भाँगड़ा आ डांडिया धेलहुँ तऽ झिझिया बिला गेल। मैथिल सभ झिझियापर रिसर्च करबा लेल आक्सफोर्ड यूनीवर्सिटीक सहारा लऽ रहल छथि। सोचू ने धनकटनीक बाद गहूँम, मसुरी बाउग करबा लेल जोतल खेतमे भाएकेँ बजा कऽ सामा-चकेवा पाबनि खेलब सेहो विलुप्त भऽ रहल अछि।

हम सभ अपना पार्टीक संविधानमे स्पष्ट रूपसँ अइ बातकेँ लिखलियैक जे कोनो शर्तपर हम सभ धार्मिक वा जतीय प्रकोष्ठक निर्माण दलकेँ आधार बनेबा लेल नहि करब, उम्मेदवारक चयनक आधार जातीय मत संख्याक आधारपर नहि होयत। हमरा सभ मिथिला क्षेत्रमे आर्थिक गतिविधिकेँ बढ़ाबा देबा लेल सर्वप्रथम हमरा सभकेँ समाजिक आ आर्थिक मिथिलावदक भावनाकेँ विकास करऽ पड़त तखने हमरा सभ जाति-भाषा-धर्मकेँ आधारपर बँटल मिथिलाकेँ एकसूत्रमे बान्हि सकब आ जँ ई काज भऽ गेल तँ सरकार संग राज्यो अपने हएत, अपन मिथिला राज्य।

आइ संविधानिक मर्यादामे रहैत सभ प्रदेश विकासक बाटपर आगू बढ़ि रहल अछि जतऽ भाषाई राष्ट्रीयताक भावना तेज अछि। अपना क्षेत्रक संस्कृतिपर गौरव करबाक भावना बलवती अछि आ एकर रक्षा लेल लड़बाक-मरबाक इच्छा अछि। परती पड़ल उपजाउ जमीन देखि कऽ कतेक दुखी होइ छै किसानक मोन तहिना हमरा-अहाँक हाल अछि। आउ वैज्ञानिक खेतीक माध्यमे जोत-कोड़ कऽ खेतमे हरियरी पसारि दी, खेत लहलहा दी।

आशा जगबैत कुलानंद मिश्रक किछु पाँति-

शीत त छँटबे करतै ओना

किछु धाह अखन जगलैए

किछु धाह अखन बाँकी छै

भोर त हेबे करतै.....

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.५.अजित कुमार झा- घटाटोप अन्हरिया मे उम्मीदक किरण: मिथिला स्टूडेंट्स युनियन

अजित कुमार झा- संपर्क-9472834926

घटाटोप अन्हरिया मे उम्मीदक किरण: मिथिला स्टूडेंट्स युनियन

भारतवर्ष मे मिथिला मैथिलीक नाम पर कतेक संस्था अछि तकर सटीक जानकारी त' नहि अछि मुदा शायदे एहन कोनो शहर अछि जतय एक्कहुटा संस्था नहि हो। कतहु बाबा विद्यापति कैँ नाम पर त' कतहु माँ जानकी कैँ नाम पर। कतहु मिथिला मैथिलीक संग विकास, त' कतहु संस्कृति सँ जोड़ि कय। मात्र अपन देशे मे नहि विदेश मे सेहो मैथिल सब अपन अस्मिताक गौरव बोध कैँ जागृत राखय लेल कोनो-न'-कोनो मंच केर गठन केने छथि। विश्व स्तर पर एहन जागरुकता त' मिथिला मैथिली लेल निस्संदेह शुभ संकेत मानल जयबाक चाही। शायदे कोनो मैथिल हेताह जे अहि तरहक संस्था सँ कोनो-न'-कोनो रुप मे जुड़ल नहि हेताह।

केओ अध्यक्ष हेताह, त' केओ सचिव हेताह। केओ संगठन मंत्री हेताह, त' केओ कोषाध्यक्ष हेताह। कोनो संस्थाक कार्यकारिणी सबहक दल सेहो झमटगर होइत छैक। किछु संख्या मे आम सदस्य हेताह त' किछु संख्या मात्र कार्यक्रमे धरि सिमित हेताह अर्थात् दर्शक वृन्द। कोनो भी संस्था लेल

आम सदस्य आ दर्शक बहुत खास मानल जयबाक चाही किएक त' पदधारी त' सहजे भेटि जेताह मुदा सुच्चा कार्यकर्ता भेटब बड्ड कठिन होइत छैक। ओना बहुत संस्था मात्र कागजे पर सेहो चलैत अछि। फौज मे कोनो तरहक संस्था नहि बना सकैत छी तखन अपन अपन संस्कृति ओ भाषाक आधार पर समूह बना क' किछु कार्यक्रम जेना कि पिकनिक क' सकैत छी। भारतीय वायु सेना मे नौकरी करबाक कारणे लगभग एहन समूह सँ निरंतर जुड़ल रहबाक सौभाग्य हमरो भेटल अछि।

कोनो संस्था साल मे एकटा कार्यक्रम करैत अछि, त' कोनो संस्था दूटा। अधिकांश संस्था विद्यापति पर्व समारोहक आयोजन करैत अछि, त' किछु जानकी नवमी केर आयोजन करैत अछि। किछु संस्था नाटकक मंचन करैत अछि, त' किछु साहित्यिक गोष्ठी धरि सिमित रहैत अछि। किछु संस्था अथवा समूह मिथिला चित्रकला कैँ क्षेत्र मे कार्य क' रहल अछि, त' किछु मिथिलाक्षर केर प्रचार प्रसार लेल। वास्तव मे जखन एहन कोनो खबर सुनैत अथवा पढ़ैत छी त' गर्वक अनुभूति होइत अछि। अपन भाषा ओ संस्कृति केर प्रति मैथिल सब जागृत छथि त' अहि बात पर गर्व भेनाइ स्वाभाविक अछि। ओना ई सिक्का केर मात्र एक पहलू अछि आ हकीकत त' ई छैक जे हर सिक्का कैँ दूटा पहलू होइत छैक। हँ अपवाद मे हिन्दी सुपर डुपर हिट फिल्म 'शोले' केर सिक्का छल। हमर अभीष्ट ओ सिक्का नहि मुदा आम सिक्का अछि। सिक्का केर दोसर पहलू देखि दुःख केर साथ कहय पड़ि रहल अछि जे असीम पीड़ा होइत अछि।

हरेक संस्था अथवा समूहक स्थापना विशुद्ध रूप सँ अपन सभ्यता ओ संस्कृति कैँ ध्यान मे राखि क' कैल जाइत अछि जाहि सँ एकर उत्थान होइक मुदा नहि जानि कोना अहि मे राजनीति रूपी वायरस प्रवेश क' लैत अछि। अहि सँ कि होइत छैक जे ओ संस्था अपन उद्देश्य सँ भटकि जाइत अछि। एक तरहें

कहल जा सकैत अछि जे ओ संस्था किछु लोगक हाथ कैं कठपुतरी बनि क' रहि जाइत अछि।बहुत बरख सँ विद्यापति पर्व समारोह मनाओल जाइत अछि। परम आदरणीय हरि मोहन झा जी केर उत्कृष्ट कविता ' विद्यापति पर्व महान हमर ' अवश्य पढ़ने होयब। नहि जानि कतेक साल पहिने ई परम्परा शुरु भेल छल आ स्नैः स्नैः मिथिलाक एकटा अति विशिष्ट पावनि बनि गेल। नबका बसात कि बहलै बुझू जे ई विशुद्ध रूप सँ एकटा व्यावसायिक आयोजन बनि गेल। आइ पी एल जँका एम पी एल अर्थात् मिथिला प्रीमियर लीग आधुनिकताक चकाचौंध मे बोहियाय लागल। परिवर्तन प्रकृति केर नियम छैक मुदा उम्मीद सँ बेसी परिवर्तन एकर मूल स्वरुप कैं नष्ट क' देलकै। आयोजन कोना करताह से त' आयोजक सबहक सोच पर निर्भर करैत छैक मुदा वर्तमान मे जाहि रुप मे अहि कार्यक्रमक आयोजन होइत अछि ताहि मे सँ बाबा विद्यापतिक नाम हटा लेबाक चाही। हिनकर ब्रांड कैं नाम पर जेहन एखुनका कार्यक्रमक फ्लेवर रहैत अछि से हमरा ई सोचय पर मजबूर क' दैत अछि जे बाबा विद्यापति मंचक एक कोन मे ठाढ़ भ' सिसकि रहल छथि। ई हमर व्यक्तिगत सोच अछि आ जरुरी नहि जे हमर बात सँ सब गोटे सहमत होथि।

संस्थागत ईर्ष्या डाह त' आम बात अछि। अपन संस्थाक कार्यक्रम मे भीड़ कोना जुटि सकैत अछि आ दोसर संस्थाक कार्यक्रम कैं कोना भाँड़ल जा सकैत अछि वैह दाव-पेंच चलाबय मे सब अपस्याँत रहैत छथि। रटल रटायल वैह पुरने भाषण, किछु पोथीक विमोचन आ झमकौआ गीत नाद सँ मैथिल जागृत भ' जेताह कि? अहि सँ मिथिला मे विकास भ' जेतैक कि? पूरा भारतवर्ष मे मिथिला मैथिलीक जतेक भी संस्था अछि कमोबेश सबहक स्वाद एक्कहि भेटत। कोनो नवीनता नहि भेटत सिवाय फूहड़ता कैं। मिथिला मे कोन एहन संस्था अछि जे शिक्षा, स्वास्थ्य आ पर्यावरण लेल जागरुकता अभियान चला रहल अछि? अंधविश्वास एवं कुरीति सँ लड़बाक लेल निसभेर

सूतल लोग कैँ जगा रहल अछि? गाम-गाम घूमि नुक्कड़ सभा ओ नाटक कैँ माध्यम सँ धरातल पर काज क' रहल अछि? शायदे कोनो एहन संस्था भेटत? बस विद्यापति पर्व समारोह कैँ साल भरि मनाओल जा रहल अछि आ दिनानुदिन एकर ब्रांड वैल्यू सेहो बढ़ल जा रहल अछि।

कहाँ कोनो संस्था कैँ देखैत छियैक जे अपन समारोह मे रक्तदान केर आयोजन करैत हो? नशा मुक्ति हेतु समाज लेल किछु काज करैत हो? भ्रष्ट आचरण वाला कैँ बहिष्कृत करैत हो? गामे गाम घूमि कय शिक्षाक अलख जगाबैत हो? अपन सबहक समाज मे जेहन जागरुकता केर प्रयोजन अछि ताहि दिशा मे कर्तव्य करैत कहाँ कोनो संस्था नजर आबि रहल अछि?

अधिकार एवं कर्तव्य मे तालमेल जरुरी होइत छैक आ तकर अभाव अछि। अपन अधिकारक प्राप्ति हेतु कर्तव्य करहे पड़त। अभिमान एवं स्वाभिमान मे कि अन्तर छैक से बूझय पड़त। रुढ़िवादी विचार धाराक मकड़जाल सँ बाहर निकलय पड़त। मिथिलाक बहुमुखी विकास लेल माटि-पानि तैयार करय पड़त। तीन तिरहुतिया, तेरह पाक सँ काज नहि चलत। मुंडे मुंडे मतिर्भिन्नाक श्राप सँ मुक्त होबय पड़त आ निस्संदेह एकजुट होबय पड़त। कोनो भी संस्था अगर जिन्दा अछि त' क्रियाशील रहय पड़तै। सब सँ जरुरी बात ई अछि जे शो पीस वाला संस्था सब सँ ई उम्मीद राखब दिवा स्वप्न थिक। सिक्का केर दोसर पहलू इएह अछि जे निश्चित रूप सँ निराश करैत अछि। मुदा निराश भेला सँ कि सफलता भेटि सकैत अछि? यात्री जी केर ओ उक्ति मोन पड़ैत अछि- ' नबतुरिए आब आगू आबओ। '

एहन निराशा मे उम्मीदक एक्कहिटा किरण नजर आबि रहल अछि हँ नबतुरिया सबहक दल- मिथिला स्टूडेंट्स युनियन । अल्प काल मे ही एम एस यु केर प्रयास एवं उपलब्धि मोनक कोनो कोण मे एकटा उम्मीद जगाबैत अछि। सन् 2015 मे अस्तित्व मे आयल अहि छात्र संगठन केर नारा- ' एक

डेग, विकास लेल' समय केर साथ सत्य होइत प्रतीत होइत अछि। दरभंगा मे एयरपोर्ट मिथिला कैँ लेल कोनो वरदान सँ कम नहि अछि। एम्स केर आन्दोलन जारी अछि। बिहार सरकार जगह कैँ ल' क' एखनहु भ्रम मे अछि। आन्दोलन केर धार तेज करय पड़तैक।

सन् 2017 मे बाढ़िक विभीषिका झेलि रहल मिथिला मे छाती भरि पानि हेलि क' जाहि तरहें गाम-गाम मे भोजन एवं अन्य जरुरी सामग्री सब ल' क' अपन जानक परवाह छोड़ि पहुँचल रहथि एम एस यु केर नबतुरिया सेनानी सब से कोना बिसरि सकैत छी। बाढ़ि के बाद कपड़ा लत्ता ओ अन्य सामग्री पठेनाई एवं बाढ़ि पानि मे हेलि क' भोजन सामग्री पहुँचेनाई मे जमीन आसमान केर अन्तर छैक। मिथिला केर उपेक्षित ग्रामीण क्षेत्र मे बिजली कैँ लेल सफल आन्दोलन चलेनाई कोनो छोट उपलब्धि नहि कहल जा सकैत अछि। दरभंगा मेडिकल कॉलेज मे व्याप्त अव्यवस्था लेल आन्दोलन, मिथिला विश्वविद्यालय मे पढ़ाई व्यवस्था ओ परीक्षा सत्र नियमित करबाक हेतु आन्दोलन, मिथिलाक अनेक शहर मे जामक स्थिति सँ निजात पाबय हेतु ओवर ब्रिज हेतु आन्दोलन, बंद पड़ल चीनि मिल मे इथेनॉल प्लांट बैसाबय एवं रोजगार हेतु आन्दोलन, मधुबनी मे केन्द्रीय विद्यालय हेतु जमीन लेल आन्दोलन, मिथिला राज्य लेल दिल्ली मे आन्दोलन, पूर्णिया मे हवाई अड्डा लेल आन्दोलनक सुर सार एवं अपन मिथिलाक सर्वांगीण विकास हेतु निरन्तर जन आन्दोलन ठाढ़ करबाक साहस देखि नबतुरिया सबहक प्रति मोन मे उम्मीद जागब स्वाभाविक अछि। हलाँकि एखन आरम्भे छैक आ एखन बहुते मीलक पाथड़ पार करब शेष छैक। एम एस यु केर नबतुरिया जौँ सार्थक प्रयास जारी राखथि, अभिमानी नहि स्वाभिमानी बनल रहैथ, अधिकारक प्राप्ति हेतुओहि कैँ अनुरुप कर्तव्य पथ पर डटल रहैथ त' अन्य समस्त मिथिला मैथिली वाला संस्था सँ इतर अपन अलग पहचान बनाबय मे सफल

हेताह आ मिथिलाक विकास हेतु उठाओल हिनकर डेग एक दिन मंजिल पर अवश्य पहुँचत मुदा यात्री जी केर ओ पंक्ति मोन राखय पड़त -

नबतुरिए आबओ आगाँ!!

उएह करत रुढ़िभंजन, आगू मूँहें बढ़त उएह...

हमरा लोकनि दिअइ आशीर्वाद निश्छल मोने;

घिचिअइ नहि टाङ पाछाँ....

ढेकी नहि कूटी अपनहि अमरत्वता'क

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.६.सच्चिदानंद सच्चू- मैथिल संगठन आ ओकर सामाजिक सरोकार

सच्चिदानंद सच्चू

मैथिल संगठन आ ओकर सामाजिक सरोकार

हमरा सभ कैँ स्वतंत्रता संग्राम मादे बुझल अछि। हमरा सभ कैँ बुझल अछि जे स्वतंत्रता सेनानी लोकनिक उद्देश्य ने मात्र अंग्रेज कैँ देश सँ भगाएब छलनि, अपितु हुनका लोकनिक उद्देश्य भारतीय समाज मे व्याप्त अनेक तरहक कुरीति कैँ दूर करबाक सेहो रहनि। सामाजिक कुरीति पैरक सभ सँ पैघ बेड़ी अछि आ आम जनमास कैँ गुलामीक अन्हार मे धकेलैत अछि। एहि कुरीति कैँ दूर कयने बिना स्वतंत्रताक लेल आवश्यक चेतनाक निर्माण नहि भ' सकैत अछि। महात्मा गाँधी सँ ल' क' कतेको छोट-पैघ नेता कुरीति कैँ दूर करबा मे दिन-राति लागल रहलाह। फलस्वरूप आइ हम सभ एकटा स्वतंत्र देशक स्वतंत्र नागरिक छी।

जँ एकर चर्चा अहाँ मिथिला आ मैथिलीक संबंध मे करैत छी त' पबैत छी जे मिथिला समाज आइयो कतेको रंगक कुरीति सँ घेराएल अछि। व्यक्ति सँ ल' क' संस्था धरि अतीतजीवी अछि। अतीतक गौरवगान मे एतेक ने हम सभ मगन भ' जाइत छी वर्तमानक जे समस्या छै, वर्तमानक जे आवश्यकता छै, एकर जे चुनौती छै, ओकरो बिसरि जाइत छिऐक। अपन परंपराक गौरव

बोध हैब नीक बात अछि। मुदा गौरवे आन्हर भ' जाएब एक तरहक कुरीति अछि जे भविष्यक प्रति आशंका उत्पन्न करैत अछि तें एहि कुरीति कैं दूर करब सेहो बहुत बेसी आवश्यक अछि। आइ मिथिला आ मैथिलीक नाम पर काज कयनिहार अधिकांश संस्था आ संगठन गौरवे आन्हर भ' गेल अछि आ इएह कारण छै जे एकर सबहक कोनो सामाजिक सरोकार नहि रहि गेल छैक।

आइ गाम सँ ल' क' शहर आ शहर सँ ल' क' महानगर धरि मिथिला मैथिली सँ जुड़ल कतेको संस्था सब सक्रिय अछि। साल भरि मे कतेको कार्यक्रमक आयोजन सेहो होइत छैक। मुदा एहि आयोजन सबहक फलाफल की निकलैत अछि, एहि पर विचार होमक चाही। जहिया विद्यापति पर्व समारोहक परिपाटी शुरू भेल रहै, तहिया भ' सकैत अछि जे एकर आवश्यकता होइक। शहर आ महानगर मे भेल एहन आयोजन सभ सँ एतेक जरूर भेलैक जे देशक विभिन्न भागक लोक सब मिथिलाक संस्कृति सँ परिचित भेलाह मुदा एहि आयोजन सबहक प्रभाव मैथिल समाज पर कतेक पड़लैक, अहू बात पर विचार होमक चाही। आइ एहि विद्यापति पर्व समारोह सबहक की स्वरूप रहि गेल छैक? नाच-तमाशा आ भोज-भात सँ बेसी एकर कोनो उपयोगिता त' हमरा देखबा मे नहि अबैत अछि।देश-दुनियाँ मे एहन आयोजनक लेल मैथिल लोकनि लाखो-करोड़ो प्रति साल खर्च करैत छथि मुदा एकर बादो ई संस्था सब अपन समाज मे चेतनाक निर्माण करबा मे सर्वथा विफल रहल अछि। आ एकर कारण हमरा इएह बुझि पड़ैत अछि जे ई सब संस्था समाजिक सरोकार सँ सर्वथा कटल अछि। गौरव गान करैत-करैत सब गौरवे आन्हर भ' गेल अछि। चेतना समिति सन-सन नामी-गामी संस्था सँ ल' क' अन्य संस्था सब सेहो एकहि नाव पर सवार अछि।

किछु दिन पहिने मिथिला स्टूडेंट यूनियन (एमएसयू) सँ हमर उमेद जागल छल। हमरा ई संगठन सामाजिक सरोकार सँ लबरेज बुझाइत छल। एकटा

घटना मोन पड़ैत अछि। बरसातक मौसिम। सगरे मिथिला बाढ़ि सँ घेराएल छल। लोक त्राहि-त्राहि क' रहल छल। एहन स्थिति मे मिथिला मैथिलीक लेल संघर्ष केनिहार किछु संगठन सभ आगू अबैत अछि आ डूबि-भाँसि रहल लोकक प्राण रक्षक बनैत अछि। अन्न बेतरे काहि काटि रहल लोक धरि आवश्यक सामग्री पहुँचाओल जाइत अछि। तहन मिथिला वासी कें ई सभ देवदूत सन बुझाइ पड़ैत छनि। एना मिथिला मैथिलीक लेल भ' रहल आंदोलनक इतिहास मे पहिल बेर होइत अछि जे कोनो संगठन सभा जुलूस सँ अलग संकट मे पड़ल मैथिलक मदति अपन जान संकट मे द' क' करैत अछि। मिथिला मैथिलीक नाम पर संघर्ष केनिहार संगठन मे आएल सकारात्मक बदलावक प्रशंसा सेहो सभतरि खूब होइत अछि। हेबाको चाही एकर प्रशंसा।

ऐ सँ पहिने मुजफ्फरपुर जिलाक यजुआर गाम मे मिथिलाक छात्र राजनीति मे सक्रिय मिथिला स्टूडेंट यूनियन (एमएसयू) द्वारा बिजलीक लेल संघर्ष कएल जाइत अछि। आजादीक बाद अखन धरि एहि गाम मे बिजली नहि पहुँच सकल छल। एमएसयूक कार्यकर्ता यजुआरक घर-घर मे जा क' लोक सभ कें बिजलीक लेल जगबैत छथि। कार्यकर्ता सभ एहि गाम मे कैंप क' क' चरणबद्ध ढंग सँ बिजलीक लेल आंदोलन करैत छथि। परिणामस्वरूप एहि गाम मे बिजली लगेबाक काज सेहो शुरू होइत अछि आ पहिल बेर लोक ई जनैत अछि जे मिथिला मैथिलीक नाम पर संघर्ष केनिहार संगठन जन समस्या कें ल' क' सेहो आंदोलन करैत अछि। स्पष्ट अछि जे ई संगठन छात्रक अछि आ युवा वर्गक सहभागिताक कारणें सोशल मीडिया पर सेहो एकर व्यापकता छै। सोशल मीडिया पर दमदार उपस्थितिक कारणें यजुआर आंदोलन जोर पकड़ैत अछि आ सफल होइत अछि।

ई संगठन कॉलेज आ यूनिवर्सिटी मे छात्रक समस्या सभ कें ल' क' सेहो सक्रिय रहैत अछि। ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय मे कतेको बेर एहि संगठन द्वारा छात्र हित मे आंदोलन कएल गेल। एकर किछु सकारात्मक परिणाम सेहो बाहर एलै। मुदा छात्रक समस्या सभ अखन धरि ओहिना अछि। विश्वविद्यालय मे संसाधनक अभाव छहिये। कॉलेज सभ मे पठन-पाठन व्यवस्था चौपट भ' गेल अछि। कॉलेज सभ मे जे संसाधन पहिने सँ उपलब्ध छलै, ओ सभ मृतप्राय भ' गेल अछि। छात्रक भीड़ बढ़ल जा रहल अछि आ संसाधन दिन प्रतिदिन घटल जा रहल अछि। वर्ग संचालन लगभग ठप भ' गेल अछि। एहन स्थिति मे छात्र संगठन सभ द्वारा एकटा जोरगर आंदोलनक खगता छलैक, जे नहि भ' रहल अछि। जँ एहि सभ मुद्दा कें ल' क' कतौ कोनो संगठन द्वारा आंदोलन भैयो रहल छै त' ओ अपन प्रभाव छोड़बा मे अखन धरि सफल नहि भ' सकल अछि। एहन स्थिति मे छात्र राजनीति छात्रक समस्या सँ हेंठ होइत बुझना जाइए।

एहन स्थिति मे एमएसयू सनक क्षेत्रीय छात्र संगठन पर पैघ जिम्मेवारी छलैक जे ओ सभ अपन विश्वविद्यालय मे व्याप्त समस्या सभ कैं ल' क' जोरगर आंदोलन करैत आ अपन विश्वविद्यालय मे गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक माहौल स्थापित करैत मुदा से अखन धरि देखबा मे नहि आएल अछि।

छात्र संघक चुनाव मे सेहो ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय मे एहि संगठनक दमदार उपस्थिति देखबा मे आएल। विभिन्न कॉलेज मे विभिन्न पद पर ने सिरिफ ऐ संगठनक उम्मीदवार अपन जीत दर्ज करौलनि, अपितु एहि संगठनक सक्रियता सँ कतेको नेशनल छात्र संगठन सभ मे घबराहटि नजरि आएल। ई सक्रियताक ओजह छल जे नेशनल छात्र संगठन सभ द्वारा चुनाव प्रचार मे अपन वरिष्ठ नेता सभ कें उतारल गेल। ई नेता लोकनि अपन - अपन पार्टी द्वारा समर्थित उम्मीदवार कैं जीतेबाक आह्वान केलनि। तें ई कहि सकै

छी जे विभिन्न कॉलेज मे एहि संगठनक प्रत्याशी हारियो क' जीत गेल। नेशनल संगठन मे घबराहटि एमएसयूक सफलता छल। मुदा ई सफलता कते दिन धरि बनल रहत, से प्रश्न अछि। किएक त' मुख्य धाराक राजनीति सँ कनियों अलग आब छात्र राजनीति नहि रहि गेल अछि। मुख्य धाराक राजनीतिक केंद्र मे जना सत्ता आबि गेल अछि, तहिना छात्र राजनीतिक केंद्र मे सेहो सत्ता आबि गेल अछि आ जहन उद्देश्य महज सत्ता प्राप्ति रहि जाइत अछि त' परिवर्तनक गप्प गौण भ' जाइत अछि।

क्षेत्रीय निष्ठा कें ल' क' सक्रिय भेल एमएसयू सँ ई उमेद रहैक जे ओ एहि व्यवस्था मे सकारात्मक बदलाव लाओत। किएक त' हालहि मे एहि संगठन द्वारा कएल गेल आंदोलन मे एकर झलकी देखबा मे आएल छल मुदा जहन एकर सांगठनिक ढांचा आ काज करबार रूप रेखा पर ध्यान दैत छी त' मोन मे ई शंका उत्पन्न होइत अछि जे ई सकारात्मक बदलाव आखरि कत्ते दिन धरि सकारात्मक रहत? अहाँ ध्यान देने हेबै जे एहि संगठनक विस्तार आ विकास मे सोशल मीडियाक अति महत्वपूर्ण भूमिका अछि। आ जहन एकर विस्तार आ विकास हम महज सोशल मीडिया सँ होइत देखैत छी त' हमरा मोन पड़ैत अछि अन्ना आंदोलन। दिल्लीक रामलीला मैदान। अहू आंदोलन कें महज सोशल मीडिया सँ ऊर्जा भेटल रहैक। एक्के बेर एहन आगि उठलै जे बुझेलै आब ई आंदोलन सभ किछु बदलि क' राखि देत। घपला-घोटाला आ भ्रष्टाचार आब इतिहास बनि क' रहि जाइत। पाँच अप्रैल 2011 सँ शुरू भेल एहि आंदोलनक व्यापक असरि देश भरि मे देखल गेल। अन्ना हजारेक समर्थन मे देश भरि धरना - प्रदर्शन कएल गेल आ जुलूस निकालल गेल। मुदा एकर बादो की भेल? बुढ़िया फूसि। जाहि लोकपाल विधेयक लेल आंदोलन कएल जा रहल छल, ओइ लोकपाल विधेयक कैं की भेल? हँ, ई आंदोलन जँ एकटा ठोस वैचारिक धरातल पर आगू बढ़ैत त' ई व्यापक असरि छोड़ि सकैत छल। एकर दूरगामी प्रभाव समाज आ राजनीति पर पड़ैत, जे

नहि भ' सकल। सोशल मीडियाक प्रभाव क्षणिक होइत अछि आ अहू आंदोलन संगे सएह भेल। सोशल मीडिया सँ जे आंदोलनक धधरा उठल छल ओ किछुए समय मे पझा गेल। वैचारिक साम्य नहि रहला सँ आंदोलनकारी नेता लोकनि अलग-अलग संगठन मे बँटि गेला। अलग-अलग संगठनक उद्देश्य सेहो अलग-अलग भ' गेल।

अन्ना हजारे 22 मार्च 2018 सं फेर दिल्लीक रामलीला मैदान मे अनशन शुरू करै छथि मुदा एहि बेरक आंदोलन मे पहिने बला समर्थन देखबा मे नहि आएल। कारण? कारण पहिनहि ई आंदोलन बिखरावक भेंट चढ़ि चुकल छल। अन्ना भले अपना कैं गांधीवादी कहथि मुदा हिनका सभ संगे अखन धरि ठोस वैचारिक पृष्ठभूमिक अभाव नजरि अबिते अछि। दोसर सोशल मीडिया पर विश्वसनीयताक संकट पहिने सँ बेसी गाढ़ भेल अछि।

किछु एहने सन कमी हमरा मिथिला मैथिली लेल काज केनिहार एमएसयू आदि संगठन सभ लग नजरि अबैत अछि। एकर सांगठनिक ढांचा मे वैचारिक प्रतिबद्धताक अभाव त' खटकिते अछि, संगहि किछु युवा सभक अति उत्साह सेहो भविष्यक प्रति शंका उत्पन्न करैत अछि। ऐ संगठनक आलाकमान कोनो व्यक्ति नहि छथि। एकर नेतृत्व 11 सदस्यीय कमांडिंग टीम करैत अछि तें हम सभ ऐ बात स' आश्वस्त भ' सकै छी जे संगठन मे लोकतांत्रिक भावना बनल रहत।

दोसर जे मूल कमी हमरा नजरि अबैत अछि ओ ई अछि जे संगठनक एजेंडा मे छात्र राजनीति केर अलावा क्षेत्रक विकास अछि। ई संगठन क्षेत्रीय समस्या कें ल' क' बेसी आंदोलनरत बुझाइत अछि मुदा हमरा हिसाबे एकरा शैक्षणिक समस्या पर बेसी ध्यान देबाक चाही। क्षेत्रक अन्य समस्या कें एजेंडा नंबर दू मे राखल जा सकै छल। संगहि क्षेत्रक समस्याक संगहि ई संगठन क्षेत्रीय भाषाक विकासक लेल बेसी जिम्मेदार नहि बुझाइत अछि।

कम सँ कम संगठनक कार्यकर्ता सभक गतिविधि सँ त' ई नजरि नहि अबैत अछि।

एकर अतिरिक्त युवा वर्गक किछु अन्य संगठन सेहो मिथिला मे सक्रिय अछि मुदा ई सभ कोनो पार्टी पोषित बुझाइत अछि, जकर राष्ट्रीय एजेंडा आ क्षेत्रीय एजेंडा मे विरोधाभास नजरि अबैत अछि। इहो कारण भ' सकैए जे एहि सभ संगठनक कोनो विशेष असरि मैथिल समाज मे अखन धरि देखबा मे नहि आबि सकल अछि।

किछु छोट-छीन आंदोलन सभ सँ चर्चा मे आएल ई संगठन आब चुनावी राजनीति मे सेहो सक्रिय होइत देखाय पड़ि रहल अछि। पिछला साल भेल पंचायत चुनाव मे एमएसयूक किछु सदस्य जिला परिषदक किछु सीट जीतबा मे सफल भेलाह। संभावना व्यक्त कयल जा रहल अछि जे ई लोकनि आब विधानसभा चुनाव मे सेहो अपन प्रत्याशी उतारता। माने ओ सामाजिक सरोकार जे बाढ़ि आ की अन्य संकटक-समस्याक घड़ी मे देखबा मे आएल छल, से अही लेल जे चुनाव मे ई संगठन सब अपन जनाधार कैँ मजगूत क' सकय। हम एकरा व्यावसायिक राजनीति मानैत छिऐ जे निष्ठापूर्ण राजनीति सँ एकदम फराक होइत अछि। क्षेत्रीय विकासक लेल निष्ठापूर्ण राजनीतिक आवश्यकता छलैक, व्यावसायिक राजनीति त' पिछला कतेको दशक सँ मिथिला मे भइये रहल अछि। मुदा अहू व्यावसायिक राजनीतिक 'सौदा' मे एमएसयू आ कि एमएसयू सन-सन आन संगठन सब एकटा गलती क' रहल अछि आ ओ गलती अछि मिथिला राज्यक माँग।

अहाँ मिथिला राज्यक माँग करबै आ मिथिलाक आम जनमानस अहाँ सँ कटैत जाएत आ अहाँ कैँ संदेहक दृष्टि सँ देखत। एकर बहुत रास सामाजिक आ राजनीतिक कारण छै। मिथिला राज्यक माँग कैँ ल' क' दिल्ली मे भीड़ जुटायब ओतेक कठिन काज नहि छै, जतेक कठिन काज मिथिला राज्यक

लेल जे चिह्नित जिला सभ अछि, ओहि जिला सभ मे जनसमर्थन जुटाएब। अहाँ ओहि जिला सबहक त' बात छोड़ू, जकरा मिथिलाक कथित हृदय स्थली मानल जाइत अछि, अहू ठाम मिथिला राज्यक लेल जनसमर्थन नहि अछि। अहू ठाम एकटा व्यापक समाज एहि आंदोलन कें संदेहक नजरि सँ देखैत अछि। आ मिथिलाक आम जनमानसक ई संदेह हमरा निकट भविष्य मे खत्म होइत नहि बुझाइत अछि। आम जनमानसक एहि संदेह कें दूर करबा लेल एहन संगठन सभ कें सामाजिक सरोकार सँ जुड़य पड़तनि मुदा ई संगठन सभ त' पहिनहि सामाजिक सरोकार सँ च्युत भ' चुकल अछि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.७.लक्ष्मण झा सागर- मिथिला स्टूडेंट यूनियन

लक्ष्मण झा सागर, संपर्क-9903879117

मिथिला स्टूडेंट यूनियन

अर्थात् मिथिला छात्र संगठन। जेना कि नामेसँ लागि रहल अछि जे ई कोनो मिथिलाक छात्र सभक जमाबड़ा अछि। 1972- 73 ई.मे आर के कॉलेजमे पढ़ि रहल छलहुँ। एक दिन सी एम कॉलेजक एकटा छात्र नेता श्री बिमालानंद झा जी हमरा सभक कॉलेज मधुबनी आयल छलाह। हमरा कॉलेजमे मीटींग केलनि। श्री बैद्यनाथ चौधरी जीकें कोनो आन्दोलनक जुर्ममे बड़ मारि मारने रहनि आ जहलमे बन्द कय देने रहनि। तकरे प्रतिवाद सभा केने रहथि। हुनक भाषणमे ततेक ने ओजस्विता रहनि जे सब छात्र लोकनि उत्तेजित भऽ गेल रहथि। परिणाम भेल जे बैजू जीकें पुलिस छोड़ि देने रहनि। हमर जीवनक ई पहिल अनुभव छल जे छात्र संगठनक राजनीति के लगीचसँ देख सकल रही। दोसर प्रसङ अछि असामक छात्र राजनीतिक जकरो हम खूब नजदीकसँ देखने छी। एम एस यू के जनबाक लेल पहिने जानब जरूरी अछि ई सब तखने हम सबपरखि सकब जे छात्र संगठन समाजक बीचमे कोना फुलाइत छैक। कतेक फलप्रद होइत छैक। देशमे मंडल आयोगक जे आरक्षण लेल सुझाव आयल छल आ तकरा जखन केन्द्र सरकार लागू केने रहय तकर बाद जे देशव्यापी छात्र आन्दोलन भेल छल से एकटा अलग इतिहास अछि। जे पी

आन्दोलन छात्र लोकनिक सहभागितासँ लड़ल गेल छल आ सफल भेल छल। परिणाम भेलैक जे भारत सरकार के काया पलट भऽ गेल रहय।

हम 1974 ई.सँ 2006 ई धरि असममे रहल छी। ओतुक्का छात्र राजनीतिकेँ जनमैत, बढ़ैत आ सियान होइत अपना नजरिसँ देखने छी। आ एकर परिणति केहेन रहल से आइ समस्त विश्व देखि रहल अछि। असमक जलवायु समशीतोष्ण अछि। ओहिठामक लोककेँ भरि पेट खाना भेटैक चाही। टेंगा माछक झोड़ भेटल ताकय। अंडी सूतक गमछा पहीरि कऽ असम टाइपक घरमे खूब आरामसँ लोक जीवन बसर करैत रहय। जनसंख्या बढ़ल गेल। लोकक आवश्यकता बढ़य लगलैक। एक समय अयलैक जे शिक्षित युवा सब नोकरी लेल परेशान हुअय लागल। ओ सब असम छोड़ि बाहर जाय नै चाहय। जलवायु सेहो एकटा कारण रहय। ओहि युवा सबहक आँखि खुजलैक। तेलक भण्डार असममे। तेल कम्पनीक कार्यालय कलकत्तामे। चायक बगान असममे। टी बोर्ड कलकत्तामे। पुरा असमक व्यापारिक कारोबारी माड़बाड़ी समाज। छोट मोट नौआक काज,धोबीक काज,पुरहितिक काज, शिक्षक के काज बिहारी आ यू पीक लोक। रेलमे सब जगह बिहारी आ बंगाली जगह छेकने छल। असम के युवा समाजक लोक के उद्वेलित केलक।

हमरा मोन अछि गौहाटीक कौटन कॉलेजमे एकटा बैसार भेल छात्र सभक। ओहि बैसारमे भाग लेने रहथि श्री प्रफुल कुमार महंत,श्री भ्रिगु कुमार फ़ुकन,श्री वृदांवन गोस्वामी,श्री सर्वानन्द सोनोवाल,श्री हेमंत विश्वशर्मा आदि। एहिमे उपरी आ नीचुलकी असमक प्रतिनिधित्व भेल छल। ओही मीटींगमे आल असम स्टुडेंट यूनिअनक (आसू) गठन भेल छल। आ से आसू पहिने समाजक बीच गेल। माजक लेल जरूरी काज सब केलक। जेना, जतेक देशी शराबक भट्ठी सब जगह जगह छल सभटा के रातारातीं ढाहि देलक। जतेक सिनेमा हालमे हिन्दीक फिल्म लागल रहय सभक पोस्टर फाड़ि कऽ डाहि देलक। नोटीस टाँगि देलक जे असमिया फिल्म टा चलि सकैत अछि। हिंदी बहुल इलाकामे पम्पलेट साइट देने रहय जे "मोर अखमत थाकिले मोर भाखा

हिखिते लागिबो"। क्रमश: ई सब सामाजिक काज करैत आसू अपन रौबिनहूड बला छवि बना लेलक। आ तकर बाद तऽ कठिन मुकाम पार करैत (उग्रवादी संगठन अल्फाक रूप अपनबैत) आइ सत्तासीन बनल अछि।

आब एहि परिप्रेक्ष्यमे एम एस यूक कार्यप्रणाली आ कार्यपद्धतिक विवेचना करब सापेक्ष हैत। हम सबसँ पहिने मिथिलाक लाल आयुष्मान अविनाश भारद्वाज खूब मोनसँ आशीर्बाद दैत छियनि। बहुत बहुत शुभकामना रखैत छियनि जे ओ पहिल एहन मैथिल युवा भेलाह जिनका मोनमे ई सोच एलनि, एहन विचार अंकुरित भेलनि जे अपन माटि-पानि आ मातृभाषा मैथिलीक संरक्षण आ संवर्धन लेल आगू अयलाह। 2015 ईस्बीक मार्चमे एम एस यूक स्थापना कयलनि। हिनक सङबय भेलखिन श्री गोपाल चौधरी,श्री मनीष पांडे, श्री राज पासवान,श्री अमित आंकुर,श्री अनुप मैथिल,श्री सागर नवदिया आ श्री विकास पाठक आदि एहेन बहुतो गोटे हिनक सहयोगी बनल छथिन। पिछला सात सालमे एम एस यू लगभग अपन एक लाख सदस्य जोड़लनि अछि। हिनका लोकनिक खातामे एखन धरि जे काज हमरा लोकनिक नजरिपर आयल अछि से बुझब आवश्यक अछि। एम एस यू एक बेर दिल्लीक जन्तर मंतर आ पटनाक मैदानमे मिथिला राज्यक माँग लेल प्रदर्शन कय चुकल छथि।दरभंगा आ मधुबनी जिलाक जिला परिषदक चुनावमे क्रमश: 3 आ 2 टा सीट जीति चुकल छथि।आ मिथिला प्रक्षेत्रक आन आन जिला सबमे अपन उपस्थिति दर्ज करेबा लेल राति दिन संघर्ष कऽ रहल छथि। एकर अलाबे आर कोन काज केने छथि से हमरा नजरिमे तऽ नै आबि रहल अछि। एम एस यूक सात सालके संघर्षक नतीजासँ खुश नै भेल जाय सकैत अछि। यदि एक लाख सदस्य संख्या सही अछि त एम एस यूके पासो अंक नै भेटक चाही। एक लाख युवा फोर्स कम नै होइत छैक। यदि नीति आ नियत साफ़ अछि तऽ चमत्कार भऽ सकैत अछि राता-राती

मिथिलामे। यदि अहाँक संग एक लाख लोक छथि तऽ दिल्ली आ पटनाक प्रदर्शनमे एक्को हजार भीड़ कियैक ने जुटल महराज?

चूँकि अहाँ लोकनिक संगठन के संग मिथिला लागल अछि तेँ एक मैथिल हेबाक नातेँ हम अहाँ लोकनिकेँ हतोत्साहित नै करय चाहैत छी। मुदा अहाँ लोकनि अपन मिशनमे कामयाब होइ तकर उपाय बताय रहल छी:-

(१) मिथिलाक प्रत्येक उच्च विद्यालय आ महाविद्यालयमे सशुल्क अपन सदस्य बनाबी।

(२) जे कोनो फरमान जारी हो तकर अनुपालन गाम स्तरीय सदस्य लोकनिक जिम्मा लगाबी।

(३) कोनो संघटन अर्थक अभावमे काज नै कय सकैत अछि। एहि लेल मिथिलाक प्रत्येक व्यापारी समाज आ नोकरी पेशा केनिहार लोक सभसँ न्यूनतम चन्दा ओसूल करी। ताहि लेल रसीद छपाबी। आय व्यय केर औडिट कराबी।

(४) पंचायत स्तरपर, प्रखंड स्तरपर सभा करी। लोक समाज के हितक बात करी। किएक चाही मिथिला राज्य तकर आवश्यकतापर भाषण करी वा भिज्ञ लोक सभसँ कराबी।

(५) गामे गाम देबाल लेखन करबाबी। हमरा चाही मिथिला राज्य। भीख नै अधिकार चाही। हमरा मिथिला राज्य चाही।

(६) गाम शहर आ नगर नगरमे होर्डींग आ विज्ञापन मैथिलीमे लिखबाबी। संगमे छात्र सभक हुजूम चाही।

(७) जनगननामे मातृभाषाक कालममे मैथिली लिखबाबी। ताहि लेल गाम समाजक लोक के जागृत करी।

(८) हिन्दी अखबार वा पत्र पत्रिका के मिथिलामे नै घुसय दी। लोक समाज के तकर दुष्परिणाम बताबी।

(९) मिथिलाक कोनो सिनेमा हालमे हिन्दीक फिल्म नै लागय दी। एहिसँ अपन मैथिली फिल्मक विकास हैत।

(१०) आफिस, कचहरी,रेलवे टीशनपर कर्मचारी लोकनि के आ बस अड्डापर उदघोषक सभ कें मैथिलीमे बजबाक लेल बाध्य करी।

(११) गाम आ शहर के दोकान सबमे चोरीसँ बेचल जाय रहल दारू के जब्त करी आ नष्ट कय दी। गुटका, गाँजा,चरस आदि निसाँ वाला वस्तुक बिक्री नै हुअय दी।

(१२) कोनो उत्सव आ त्योहारमे गाम आ शहरमे बजैत भोजपुरी,हिन्दी गीत के नै बाजय दी।

(१३) गामक प्राइमरी विद्यालय के शिक्षक/ शिक्षिका के मैथिली माध्यमसँ नेना सबके पढ़ेबाक लेल बाध्य करियनि।

आर जे जन उपयोगी काज सभ कय सकी से सब करी पहिने गाम घरमे। समाजक मोन जीतू। समाज के विश्वासमे ली पहिने। तखन अहाँ लोकनिक जे मनसूबा अछि से पूरा हेबामे सहूलियत हैत,हमरा बुझने। अन्यथा समय श्रम उर्जा नष्ट होइत रहत। हाथ आयत गोल गोल सुन्ना।

ऐ **रचनापर** **अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.८.प्रणव झा- मिथिला स्टूडेंट यूनियन

प्रणव झा

मिथिला स्टूडेंट यूनियन

मिथिला स्टूडेंट यूनियन (एमएसयू)सँ हमर परिचय संभवतः वर्ष 2017 मे भेल छल। ताहि समय मे ई संस्था कदाचित मिथिलाक समाज मे अपन स्थापनाक प्रारम्भिक दौर मे छल। वर्ष 2017 केर अगस्त मास मे मिथिला क्षेत्र मे भयंकर बाढ़ि आयल छल। ऐ बाढ़ि के दौरान एमएसयू के युवा सदस्य सभ अपन सीमित क्षमता मे जमि कऽ राहत आ बचाव कार्य केने छल जाहि विषय मे हमरा सन सन लोक सब के सोशल मीडिया मे फोटो आ पोस्ट के माध्यम से ज्ञात भेल छल। हमरा याद आबि रहल अछि जे विदेह के कोनो अंक मे आशीष अनचिनहार जी के एकटा लेख सेहो आयल छल बाढ़ि राहत मे एमएसयू के योगदान शीर्षकसँ।

एमएसयू के युवा टोली ऐ काज से (जे सोशल मीडिया द्वारा पता चलि रहल छल) हमहूँ प्रभावित भेलहुँ। हमरा बेसीखन सरकारी व्यवस्था पर भरोस रहैत अछि आ बाढ़ि या अन्य प्राकृति आपदा आदि मे जे कोनो सहयोग रहैए से हम सीएम रिलीफ़ फंड या पीएम रिलीफ़ फंड के माध्यमेसँ करैत छी। मुदा

एमएसयू सदस्य के युवा जोश आ समर्पण देखि हमरा ऐ संस्था पर भरोस भेल आ हुनक मनोबल बढ़ाबऽ लेल एकटा अति छोट छीन सहयोग केने रही।

तकरा बादसँ सोशल मीडियाक माध्यमसँ ऐ संस्था के लगातार मिथिलाक सामाजिक, आर्थिक मुद्दा पर सोशल मीडिया आ जमीन पर एक्टिव देखि रहल छी। ऐ संस्था के वर्तमान अध्यक्ष आ ओइ समय के मीडिया प्रभारी आदित्य मोहन जीसँ सोशल मीडियाक माध्यमसँ विभिन्न विषय पर कखनो काल चर्चा भऽ जाय। ओइ समय मे धीरे धीरे बढ़ैत एमएसयू लगातार प्रभावी मुद्दा जेना पंचायत स्तर पर भ्रष्टाचार आ सरकारी सेवा के ध्वस्त डिलीवेरी व्यवस्था, कानून व्यवस्था, शिक्षा, स्वास्थ्य रोजगार आदि मुद्दा।

नवंबर 2017 मे एमएसयू, एलएनएमयू के जर्जर आ ध्वस्त व्यवस्थाक विरुद्ध आ व्यवस्था सुधार लेल एकटा आंदोलन चलेने छल जे ग्राउंड पर सेहो एमएसयू के हजारो कार्यकर्ता आ समर्थक द्वारा चलाओल गेल छल संगहि सोशल मीडिया पर सेहो जोरदार हैशटैग आंदोलन चलल छल। सच कही तऽ हम पहिल बेर कोनो मैथिल संस्था द्वारा मिथिला मे उच्च शिक्षा के जर्जर व्यवस्था के विरुद्ध कमीट्मेंट के संग सशक्त आंदोलन करैत देखि रहल छलहुँ अन्यथा तऽ मैथिल संस्था सब के मंच-माला आ पाग-डोपटासँ आगा बढ़ैत नै देखै छलियै। शिक्षा हमर प्रिय मुद्दा अछि आ हमर माननाइ अछि जे अपन परिवार, समाज, राज्य आ देश के प्रगति नीक शिक्षा व्यवस्थेसँ संभव छै, ताहि लेल हम ऐ आंदोलन के बहुत गर्मजोशी आ उत्साह के संग समर्थन देने रही। ई एकटा सफल आंदोलन कहल जा सकय अछि किए कि एकरा बाद एलएनएमयू के सत्र आ परीक्षा व्यवस्था मे सुधार देखल गेल छल।

आब एमएसयू मिथिला के सामाजिक आ छात्र के रूप मे अपन विशिष्ट पहिचान बनाब' लागल छल आ दरभंगा एयरपोर्ट, रांची-जयनगर ट्रेन, रोजगार इन मिथिला, इन्वेस्ट इन मिथिला, चिन्नी मिल, दरभंगा एम्स

आदि आदि विषय के लऽ कऽ लगातार एक्टिव होमय लागल आ सशक्त सेहो।

अगस्त 2018 मे एमएसयू अपन विस्तार आभियान के तहत पंचायत जोड़ऽ के अभियान चलेलक जै मे मिथिलाक विभिन्न जिला के पंचायत सब मे प्रचार अभियान कऽ लोक सबकेँ विभिन्न मुद्दा के प्रति जागरूक करबाक आ लोक सब के संस्था से जोड़बाक सफल अभियान चलाओल गेल छल। ऐ दौरान एमएसयू के प्रसार आ नव उर्जा देखि वर्तमान राष्ट्रीय सत्तारूढ़ दल के नेता, कार्यकर्ता आ सपोर्टर सब मे एमएसयू मे एकटा पिछलग्गू संस्था बनबाक संभावना देखायल छल (एना हमरा प्रतीत होइ अछि)। 2019 मे आम चुनाव छल। एहन मे एमएसयू के उर्जा के दोहन के साइत कोनो रणनीति बनि रहल छल। मुदा एमएसयू चुनाव के दौरान अपन इंडिविजुअल स्टेटमेंट, आ मिथिला के मुद्दा के आधार पर सपोर्ट या विरोध के रुख देखा के नै सिर्फ हिनकर सबहक उम्मीद पर पानि फेरि देलक अपितु अपन अलग राजनैतिक पहचान आ पथ के संकेत सेहो दऽ देने छल। एकर परिणाम स्वरूप ई भेल जे बहुते एहन लोक सब जे एखन तक ऐ संस्था आ एकरा से जुडल सदस्य सब के प्रशंसा के पुल बान्हि रहल छलाह से सब आब हिनका सब के गरियाब' लगलाह, पीलिया रोग (पीयर रंगक वस्त्रक कारण) तऽ कि तऽ कहाँ कहनाइ शुरू कऽ देने छलाह। मुदा एमएसयू अपन अलग बाट धेने रहल।

मई 2019 मे एमएसयू एकटा आर ज्वलंत मुद्दा (मिथिला मे जल संकट) आ पोखरि सब के अतिक्रमण के लऽ कऽ #पोखरि_बचाउ जन जागरूकता अभियान चलेने छल। इहो हमर कंसर्न के मुद्दा छल आ ऐ अभियान मे भाग नेने रही।

अगस्त 2017 के बाढ़ि राहत के बाद एमएसयू के एकटा आर सराहनीय राहत कार्य जून 2019 मे चमकी बुखार के दौरान देखल गेल छल। फेर

कोरोना आदि काल मे शनैः शनैः संस्था मिथिला के किछु क्षेत्र आ दिल्ली-मुंबई महानगर मे अपन प्रभाव आ कार्य से सामाजिक आ राजनैतिक दुनू क्षेत्र मे अपन हस्तक्षेप देखेबा मे सक्षम रहल। पिछला पंचायती चुनाव मे एमएसयू किछु जिला मे बढि-चढ़ि कऽ हिस्सा लेलक आ जिला पार्षद, सरपंच सहित अनेकों पद पर एमएसयू के आ एमएसयू समर्थित दर्जनो उम्मीदवार अपन विजय पताका फहरा कऽ साबित केलनि जे ऐ संस्था के राजनैतिक इच्छाशक्ति सेहो खूब मजगूत छैक आ राजनैतिक जन समर्थन भेटनाइ चालू भऽ गेल छैक। ऐ मेसँ धीरज कुमार आ सागर नवदिया सन हमर प्रिय नेता गण भी शामिल छथि। जै प्रकारे राजनैतिक रूपसँ ई संस्था मिथिलाक मुद्दा के लऽ कऽ आगू बढ़ि रहल छथि हमरा एकटा उम्मीदक रोशनी लागै अछि यदि भविष्य मे ई शिथिलता, भ्रष्टाचार, जातिवाद आदिक चंगुल मे नै पड़ै तऽ।

एमएसयू द्वारा सामाजिक पुनर्जागरण के लेल भी कइएक टा सराहनीय प्रयोग कैल गेल जेना मिथिला के जे आइकनिक इतिहास पुरुष, देवता-पितर, स्वतंत्रता सेनानी आदि भेला हुनका सभ के विषय मे सोशल मीडिया आ जन अभियान के माध्यमसँ समाज मे जागरूकता पैदा करबाक प्रयत्न। 'जानकी नवमी' उत्सव के आयोजन ऐ संदर्भ मे मील के पाथर साबित भऽ रहल अछि। ई उत्सव मैथिल सभ मे एकजुटता, अपन पहिचान आ पुनर्जागरण हेतु एकटा नव पूलक निर्माण कऽ सकैए। एहि उत्सवक शुरुआत के तुलना हम लोकमान्य तिलक जी द्वारा महाराष्ट्र मे शुरू कैल गणेश उत्सव से करऽ चाहब।

हम ऐ संस्था के शुभेच्छु छी तथापि वर्तमान मे ऐ संस्थाक किछु कमी जे हमरा नजरि मे अछि से उल्लेख करऽ चाहब:

१) यद्यपि हमरा ऐ संस्था के पदाधिकारी या सदस्य सब के व्यवहार मे जातिवादी या सांप्रदायिक होबाक कोनो लक्षण नै देखाइ अछि आ नै हम एहन

मानै छी, तथापि जे कारण होइक मुदा ऐ संस्था मे एखन समाज के विभिन्न वर्ग/संप्रदाय/महिला आदि के रिप्रेजेंटेशन ओइ अनुपात मे दृष्टिगोचर नै भऽ रहल अछि जे हेबाक चाही। अतः संस्था के ऐ पर विचार करबाक चाही जे ऐ मे समाज के विविध वर्ग के रिप्रेजेंटेशन बढ़ै आ कियौ एकरा विशिष्ट वर्ग या जातिवादी संस्था होबाक आरोप नै लगाबै।

२) ठीक एहिना मिथिला के रिप्रेजेंट करबाक दावा करय बला ई संस्था वास्तव मे एखन धरि दरभंगा-मधुबनी-सहरसा आदि जिला तक ही अपन प्रभाव बना सकल अछि। मिथिला के बहुत रास जिला मे एखन एकर कोनो प्रभाव नै अछि। हमर गृह जिला बेगूसराय के लेल आदित्य मोहन जी बहुत दिन पहिने कहने छलाह जे बेगूसराय लिंक भेटि गेल जल्दीए संस्था ओतऽ प्रभावी बनत। मुदा एखनो बेगूसराय के गाँव मे लोक एमएसयू के नाम तक नै जानै छै। ऐ मामिला मे भी एमएसयू के मेहनत करबाक दरकार छैक आ अधिकाधिक जिला मे अपन मजबूत उपस्थिति दर्ज करबाक छैक।

३) एकटा आर समस्या जे हमरा नजरि मे छैक ओ ई कि कैक बेर कोनो गलती भेला पर संस्था स्टेप बैक करबा के स्थान पर अपन गलती के डिफ़ेंड करऽ मे लागि जाय छैक। उदाहरण के लेल किछ दिन पहिने मनीष कश्यप नाम के एकटा यूट्यूबर के द्वारा एकटा फेक वीडियो जै मे कहल गेल छल कि तमिलनाडू मे बिहारी मजदूर के काटल जा रहल छैक, एमएसयू ऐ मामला आ तमिलनाडु के विरोध करऽ लेल आंदोलनरत भेल। जल्दीए ई झूठ पकड़ल गेल। आजुक समय मे स्थिति ई छैक जे अक्सरहाँ कियौ फेक न्यूज के शिकार भऽ सकैए। मुदा एकबेर वास्तविकता के भान भेला पर स्टेप बैक करबा मे कोनो खरापी नै छल। मुदा संस्था तथापि नै सिर्फ तमिलनाडू भवन के घेराव पर अड़ल रहल अपितु मनीष कश्यप सन फेक न्यूज फैलबे बला के समर्थन मे आबि गेल। हमरा लागै अछि जे संस्था के ऐसँ बचबाक चाही।

४) किए कि वर्तमान मिथिला के भूमि जहाँ मिथिला के वास्तविक मुद्दा पर बात करय बला बहुत कम संस्था छैक। एमएसयू सन संस्था कदाचित भविष्य मे मिथिलाक राजनीति मे एकटा साकारात्मकता लाबऽ मे सफल सिद्ध भऽ सकै अछि आ एही आशा मे हमरा सन लोक सब एकर मुद्दा आधारित समर्थन करैत रहैत छी आ भविष्य मे बेसी वाइब्रेण्ट बेसी सशक्त आ बेसी प्रभावशाली आ रिजल्ट ओरिएंटेड होथि तकर शुभकामना दैत छी।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.९.आचार्य रामानंद मंडल- मिथिला स्टूडेंट्स यूनियन बनाम मिथिला राज्य!

आचार्य रामानंद मंडल

मिथिला स्टूडेंट्स यूनियन बनाम मिथिला राज्य!

नाउ से बुझाय कि मिथिला स्टूडेंट्स यूनियन (एम एस यू)मिथिला यूनिवर्सिटी के स्टूडेंट्स के कोनो यूनियन हय। धीरे धीरे जानकारी भेल कि २०१५ स्थापित ई मिथिला क्षेत्र के विद्यार्थी के गैर राजनीतिक स्टूडेंट्स यूनियन हय। परंतु ई यूनियन पूरा मिथिला के आच्छादित त नहिये करैय हय। विशेषकर मधुबनी - दरभंगा मे प्रभावित हय। स्टूडेंट्स यूनियन स्टूडेंट्स के लेल कम ,राजनीतिक आंदोलन के लेल ज्यादा सक्रिय दिखाई पड़ैत हय। उदाहरण के लेल मिथिला राज्य निर्माण आंदोलन।

कुछ महिना पहिले दिल्ली के जंतर-मंतर पर प्रदर्शन कैले रहल। मिथिला के कुछ सांस्कृतिक संघ संगठन बिना बैनर के शामिल भेल रहय। परंतु प्रदर्शन प्रभावकारी साबित न भेल।एकर कारन ई कि एक त यूनिन मिथिला के सभ जिला के शामिल न कर पायल। संगठन विस्तार के अभाव खटकल। सर्वमान्य नेतृत्व न दिखाई पड़ल। यूनियन मे सर्ववर्ग के प्रतिनिधि के अभाव दिखल। कोनो यूनियन के आंदोलन के सफलता सभ वर्ग के भागीदारी आ

विश्वास पर निर्भर करैय हय। उदाहरण स्वरूप झारखंड आ तेलंगाना। आंदोलन तब सफल भेलैय जब सभ वर्ग के भागीदारी, विश्वास आ सर्वमान्य नेतृत्व मिललय।

भारत के आजादी तब मिललय जब गांधी जी के नेतृत्व मे आंदोलन भेलैय। ओना त आंदोलन १८५७ से होइत रहय, परंतु आजादी १९४७मे मिललय। आजादी के दोसर आंदोलन जे छात्र आंदोलन रहय। ओहो गुजरात के छोट सन छात्र आंदोलन। जब १९७४ मे लोकनायक जयप्रकाश नारायण जैसन नेतृत्व मिललय तब जाके आपातकाल के विरुद्ध रास्ट्रस्तरीय संपूर्ण क्रांति आंदोलन १९७७ मे सफल भेलैय।

मिथिला स्टूडेंट्स यूनियन के राज्य निर्माण आंदोलन के सफलता के लेल पुनर्विचार करे के आवश्यकता जान पड़ैय हय। सभ से पहिले यूनियन के नारा -दे जान कि ले जान पर विचार। ओना ई हिंसात्मक लगैय हय। यूनियन के सभ जिला में प्रखंड स्तर तक गठन करे के आवश्यकता हय। तब सर्वसम्मति से राज्य कार्यकारिणी के गठन। मिथिला स्टूडेंट्स यूनियन के सांस्कृतिक आ राजनीतिक संगठन से मिलके एगो मजबूत मोर्चा बनाना आवश्यक हय। तब कार्यक्रम आ सबसे महत्वपूर्ण राज्यस्तरीय नेतृत्व जे छात्र से विलगो हो सकैय हय। जे सर्वमान्य आ प्रभावकारी व्यक्तित्व के होय। तबे जाके मिथिला स्टूडेंट्स यूनियन के मिथिला राज्य निर्माण आंदोलन के सफलता असंदिग्ध रहत।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१०.डॉ कैलाश कुमार मिश्र-मिथिला स्टूडेंट यूनियन: दशा, दिशा आ नेतृत्व

डॉ कैलाश कुमार मिश्र-संपर्क-9810326983

मिथिला स्टूडेंट यूनियन: दशा, दिशा आ नेतृत्व

मिथिला स्टूडेंट यूनियन (एम एस यू) केर प्रयोग जड़ि परक मैथिल आ प्रवासी मैथिल लेल एक मिश्रित अनुभूति अनलक। अहि पर किछु लिखबा सँ पुर्व किछु बात स्पष्ट करब अनिवार्य। हमरा अगर पुछल जाय जे मिथिला आ मैथिल लेल कार्य करय बला संस्था सभ मे सभ सँ उत्तम अहां ककरा मनैत छी, त हमर उत्तर हएत "मिथिला स्टूडेंट यूनियन "। यद्यपि ई उत्तर अहि द्वारे होयत जे मिथिला आ मैथिली लेल कुनो संस्था बहुत गम्भीर नहि अछि। बीच मे सखी बहिनपा समूह सँ आश जागल छल मुदा ओ सभ रचनात्मक शुन्य आ पूर्णकालिक उत्सवजन्य समूह बनल जा रहल छथि। मिथिला स्टूडेंट यूनियन बाढि आ किछु हद तक विमारी आ कोरोना काल मे यथासंभव नीक काज केने अछि मुदा एकर दिशा जेना गम्भीर नहि रहल हो। व्यक्ति विशेष एकरा पर हावी रहल छथि। व्यक्ति विशेष मे अधिकांश लोक बिलो एवरेज स्तर केर छथि। ई विद्यार्थी केर एहेन संस्था अछि जाहि मे विद्यार्थी कम आ अन्य लोक अधिक छथि। नीक कॉलेज, स्थान केर विद्यार्थी, गम्भीर विद्यार्थी आ सब वर्गक विद्यार्थी एहि संस्था सँ सतत दूरी बनेने रहैत छथि। आरो बहूत बात सब अछि।

चलू प्रारम्भ नीक द्रष्टव्य सँ करैत छी। एम् एस यू पहिल बेर एक सेतू बनल प्रवासी मैथिल आ जड़ि मे रहैत मैथिल केर बीच। पहिल बेर एहि संस्था केर सदस्य लोकनि मधुबनी, दरभंगा केर सीमा रेखा सं नैमित्तिक सही मुदा मिथिलाक आन सांस्कृतिक सह भौगोलिक क्षेत्रक लोक के प्रतिनिधि बनेलक। पहिल बेर गंभीरता संग थोड़बे संख्या मे सही मुदा ब्राह्मण आ कायस्थ जाति के अलावे अन्य जाति, अनुसूचित जाति आदि के लोकक समावेश केलक। शनैः - शनेः ई सब कार्यक विस्तार सेहो केलक। संस्था केर कार्यकारिणी संग अनुभवी, उद्योगपति, सांस्कृतिक आ सामाजिक लोक के अपन एडवाइजरी मण्डल मे नीतिगत बात आ विचार लेल रखलक। ई सभ प्रजातान्त्रिक ढांचा के मजबूत करैत ई निर्णय लेलक कोनो व्यक्ति एक बेर सं अधिक अध्यक्ष नहि रहत। नहुँ - नहुँ किछु स्त्रीगण सब सेहो एहि संस्था सँ जुड़े लगलीह। पहिल बेर ई संस्था समस्त मिथिला भू-भाग केर भाषा, साहित्य, संस्कृति, इंफ्रास्ट्रक्टरल

डेवलपमेंट, रेल, सड़क, बिजली, हवाई जहाज, रोजगार, बंद पड़ल चीनी मील, जूट मील, वस्त्र मील आदि लेल माउथ पीस बनल। किताबी बात जन -जन लेल जनतब केर विषय बनल गेल। पहिल बेर एकर कार्यकर्त्ता अपना लेल ड्रेस कोड विकसित केलक (पियरका) आ पहिलबेर युवा जोश आ उग्रता प्रदर्शित केलक। ई दू डेग एम् एस यू लेल रामवाण भेलैक। पहिल बेर किछु करू अथवा मरू विचारधारा केर युवक एहि संस्था सं जुड़ल जाहि पंडौल सं पटना धरि आ दरभंगा सँ दिल्ली धरि लोक आ सरकारी तंत्र मे एक बात गेलैक जे ई सब अपन धरती, अपन लोक, अपन भाषा, संस्कृति, आ क्षेत्रक विकास लेल उग्रो रूप धारण करैत बहुत आगा धरि जा सकैत अछि। पहिल बेर अहि तरहेँ मैथिल सभक चूड़ा दही खाइत आ सुस्त रहैत इमेज सँ क्रन्तिकारी केर इमेज केर मेकिंग शुरू भेल। सब क्षेत्रक लोक उदार होइत एहि संस्था संग जुड़े लगलाह। यद्यपि विद्वान वर्ग नहिये जकाँ अएलाह। किछु

एक्टिविस्ट्स सब जरूर आगा अएलाह। अहि संस्था केर कर्णधार सब नहुँ-नहुँ अन्य संस्था सब संग समन्वय बनाबय लगलनि। काज आगा बढ़ैत गेल। ई मिथिला स्टूडेंट यूनियन केर प्रभाव छल जे दिल्ली आ दरभंगा केर संस्था जे लोक सभ परिवार केर पॉकेट केर संस्था जकाँ सुस्त भेल चलबैत छलाह से सब एकाएक साकांक्ष भ गेलाह। अखिल भारतीय मिथिला संघक त बहुत हद धरि जीर्णोद्धार भ गेलैक। एतबे नहि मिथिला स्टूडेंट यूनियन केर सेनानी सब बिहार आ पूर्वी उत्तर प्रदेशक अन्य भाषा आ बोली जेना कि भोजपुरी, मगही, अवधी आदि लेल प्रमाण आ अनुकरणीय दृष्टान्त बनल गेल। किछु लोक एहि कारणे सेहो एहि संस्था केर सेनानी सब संग ईर्ष्या करय लागल मुदा, मिथिला स्टूडेंट यूनियन केर काज चलैत रहलैक। समय चलैत रहलैक। समय बढ़ैत रहलैक। चलैत आ बढ़ैत समयक गति सं संस्था गतिमान होइत रहल। बेगूसराय, सहरसा, सुपौल, कोशी अर्थात मिथिला केर पोर-पोर सं अपना आपके जोड़ैत रहल।

आब किछु बात जे हमरा गलत लगैत अछि तकरा दिस ध्यान देब सेहो आवश्यक अछि। मिथिला स्टूडेंट यूनियन चाहियो क ब्रहमणकेंद्रित आ ब्राह्मण सँ सम्पोषित संस्था बनल रहल अछि। एखन धरि दरियादिली देखबैत एकौ टा अध्यक्ष अन्य जाति अथवा वर्ग किंवा समुदाय केर लोक कैँ नहि देल गेल अछि। ब्राह्मणेतर जाति केर लोक आ विद्यार्थी मे एखनो ई बात घर केने छैक जे सांस्कृतिक गतिविधि पर ब्राह्मण आ ताहू मे दरभंगा मधुबनी केर ब्राह्मण केर एकक्षत्र राज्य छनि। दुर्भाग्य सँ एम एस यू एहि मान्यता के निरर्थक साबित नहि क सकल। उलटे स्थापना वर्ष सँ आई धरि केवल दरभंगा आ मधुबनी ज़िला केर ब्राह्मण एकर अध्यक्ष बनैत रहलनि। परिणाम ई भेल जे दरभंगा मधुबनी केर अलावे अन्य ज़िला केर लोक आ ब्राह्मणेतर जाति आ समुदाय एहि संस्था सँ अपना आपके सहजता सँ नहि जोड़ि पाबि रहल अछि। एक बात अवश्य भेल छैक जे साहित्य आ संस्कृति केर क्षेत्र मे

ब्राह्मणेतर जाति केर लोक आब साकांक्ष भेल जा रहल छथि। साहित्य अकादमी केर संयोजक नचिकेता जी बनल छथि। पहिल बेर सहरसा (सुपौल आदि) केर लोक, सब वर्ग केर प्रतिनिधि केर चयन ओ केलनि अछि। जगदीश प्रसाद मण्डल केर साहित्य अकादमी भेटब सेहो एक नव सांस्कृतिक उन्नयन केर परिचायक अछि। पहिल बेर नव रत्न केर चयन मे लोक सही व्यक्तित्व केर आभा देख रहल अछि। स्वतंत्र मिथिला राज्य लेल सेहो आब ब्राह्मणेतर जाति केर लोक आगा आबि रहल छथि। विशेष रूप सँ जाहि तरहेँ श्री रोहित यादव एवं अन्य युवक मिथिला केर गामे गाम घूमि लोक सभक ध्यान स्वतंत्र मिथिला राज्य लेल जगा रहल छथि से अनुकरणीय लागि रहल अछि। मुदा एहि परिवर्तन मे मिथिला स्टूडेंट यूनियन केर कूनो महत्वपूर्ण योगदान नहि छैक।

इमहर दू तीन वर्ष सँ मिथिला केर आइडेंटिटी के सीता सँग जोड़बाक प्रयास भ रहल अछि। एहि बेर जेना अनेक संस्था संग मिथिला स्टूडेंट यूनियन आ गाम घरक संस्था सब जानकी नवमी पर जे कार्य कएलनि अछि ताहि सं लगैत अछि जे बहुत शीघ्र जानकी नवमी भारत आ नेपाल केर मिथिला लेल कल्चरल आइडेंटिटी केर सर्वमान्य उत्सव बनि जाएत जेना बैशाखी पँजाब लेल। अगर तटस्थ भेल देखी त एहि कार्य लेल अनेक संस्था संग मिथिला स्टूडेंट यूनियन सेहो अछि। कुनो ई कल्पना एकरे मात्र नहि छैक। से जे हो, सहयात्री त बनिए रहल छैक।

मिथिला स्टूडेंट यूनियन केर जखन निर्माण केर शैशव अवस्था रहैक त संविधान मे प्रावधान रहैक जे एक व्यक्ति मात्र एक साल लेल अध्यक्ष हेताह। दोसर साल अर्थात प्रति वर्ष नव लोकक चयन (चुनाव) द्वारे हएत। मुदा किछुए दिनक बात एहि अनुच्छेद मे संशोधन भेलैक आ लोक

आब 2 वर्ष धरि चयनित भ रहल छथि। ई कुनो उत्कीर्णा बला बात नहि भेल।

सखी बहिनपा केर विस्तार आ महिला वर्ग में उत्साह देखैत लागि रहल अछि जे मैथिलानी आगा आबि रहल छथि। मिथिला स्टूडेंट यूनियन मुदा एक एहेन महिला केर चयन नहि क सकल अथवा नहि करय चाहैत अछि जे मिथिला स्टूडेंट यूनियन केर भार वहन क सकथि। अगर कुनो महिला एकर अध्यक्ष भ जाथि त महिला वर्ग मे क्रान्ति आबि सकैत अछि संगहि संस्था केर काया पलट भ सकैत छैक।

मिथिला मैथिली केर एक बिडंबना रहल अछि जे मैथिली साहित्य के छोड़ि अन्य विद्वान वर्ग जेना कि दर्शन शास्त्र, राजनीति विज्ञान, इतिहास, समाजशास्त्र, भूगोल, अर्थशास्त्र, अंग्रेजी (भाषा आओर साहित्य) प्रबंधन आदि कुनो तरहक साहित्यिक आ सांस्कृतिक गतिविधि सँ उदासीन रहैत छथि। दुर्भाग्य सँ कुनो संस्था हुनका सभके अनबाक विशेष यत्नो नहि केलक अछि। अगर दिल्ली केर बात करी त 56 साल सँ अखिल भारतीय मिथिला संघ काज क रहल अछि। दिल्ली केर प्रथम उपराजयपाल छलाह आदित्यनाथ झा। हुनकर मैथिली प्रेम सब जनैत छी तथापि अखिल भारतीय मिथिला संघ कुनो ढ़ंग केर स्थान पर संस्था लेल ज़मीन नहि आबंटित करा सकल। कॉमरेड भोगेन्द्र झा शुरू सँ अंत धरि अखिल भारतीय मिथिला संघ के पॉकेट केर संस्था बना मज़दूर यूनियन जकाँ चलबैत रहलनि। दिल्ली यूनिवर्सिटी, जे एन यू, आई आई टी आदि केर विद्वान सभ अहि संस्था लेल कुनो उपयोग केर प्राणी नहि बुझल गेलाह। बाद मे की स्थिति भेल आ एखन कोना अछि तकरा सभ कियोक जनैत छी। गलती यद्यपि दुनू पक्ष सँ अछि। अगर झारखण्ड, उत्तराखण्ड आदि केर स्वतंत्र राज्य मे आबय केर इतिहास पढ़ब त आश्चर्य लागत जे कोना

विद्वान, मीडियाकर्मी, विद्यार्थी, प्रवासी आ देशी, स्त्री आ पुरुष सभ कियो 100 प्रतिशत मनोयोग सँ लागल छल। मुदा एहेन एकाग्रता हमरालोकनि मे नहि अछि। ई कमी अथवा दोख मिथिला स्टूडेंट यूनियन मे सेहो स्पष्ट दृष्टिगोचर भ रहल अछि।

एक प्रवृत्ति इहो लागल जे मिथिला स्टूडेंट यूनियन सतत राज्य आ केंद्र सरकार केर विरोध आ खाश राजनैतिक दलक विरोधी रहल अछि। ई कने गंभीर मसला थिक। मैथिली आ मिथिला केर विकास के ध्यान रखैत एहेन बात सँ हमरा जनैत परहेज होबाक चाही। अगर अहाँ कुनो राजनैतिक दल सँ विरोधी तेवर रखबैक त भ सकैत अछि जे ओहि दल अथवा आइडियोलॉजी संग साम्य राखयबला विद्यार्थी आ लोक अहाँ सँ दूरी बना ले।

मिथिला स्टूडेंट यूनियन मिथिला मूल केर उद्यमी संग सेहो बड्ड सुन्दर नेटवर्क नहि स्थापित क सकल अछि। एहि पर थोड़े गंभीर भय एकरा सुधारल जा सकैत अछि। परामर्शदाता सब तरहक होथि से ध्यान राखक चाही। अध्यक्ष बहुत गंभीर, वेल इन्फोर्मेड, नेतृत्व क्षमता सँ पूर्ण, सहिष्णु, सब संग तालमेल रखनिहार, विनम्र होथि। सतत सिखबाक आकांक्षी होथि त ई संस्था आगा बढ़ि सकैत अछि।

ई सब हमर विचार अछि। सहमति आ असहमति पाठक लोकनि के ऊपर छनि। अंततः हमर त यैह सोच अछि जे अतेक कमी के बादो मिथिला स्टूडेंट यूनियन सब संस्था सँ नीक अछि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.११.लालदेव कामत- एम एस यू केर हश्र

लालदेव कामत, संपर्क-०७६३१३९०७६१

एम एस यू केर हश्र

सन् २०१५ ई० मेँ दिल्ली स्थित कम्युनिस्ट खेमामे बड़ जोर-शोरसँ भीतरे भीतर एक चर्चा छलैक - एकटा छात्र संगठन मिथिला नाम पर हुअय। से किछ कामरेड लोक युवा वर्गमे एहि गप्पकेँ पसारयमे लागि गेलाह। संगहि ईहो मनमे रोपलनि जे परिवार आ सरकुटुममेसँ किछ नव पीढ़ीक नेतृत्व विकसित करी। एहि संदर्भ ओतयसँ घोषणा पत्र जारी भेल, घोषणापत्र तँ प्रायः बराबरे निकलैत छैक। मिथिला स्टूडेंट यूनियन नामसँ संगठन अनुप मैथिल, आदित्य मोहन,रौशन मैथिल आ नीतीश कर्ण आदि विद्यार्थीगण केँ ई संस्था चलेबाक दायित्व भेटलनि। ई छात्रक विशाल संगठनके रूपमे बिहार - झारखण्डसँ उभरि समक्ष आयल। एहि छात्र संघमे गैर-छात्र जुबक लोक सेहो जुटल रहल। जखन कम्युनिस्ट केर छात्र फेडरेशन मिथिलामे कमजोर पड़ल तँ ऐ संगठनक कर्ताधर्ता लोकनि के बीच किछु सदस्यता बढ़ल आ थोड़ेक छीजनो भेल रहैक। एहि संगठनक उतरोतर विकास होइत गेल। कारण विद्यार्थीगणक शिक्षण समस्यासँ ल' कऽ शिक्षा प्रणाली , रोजगार, मिथिला - मैथिल

विषयके हर कालेज- यूनिवर्सिटी धरि चर्चाकेँ अभियान पूर्वक चलाओल जाइत रहलैक। आत्म गौरव बोध सेहो जन जनमे जगलैक। एहि संगठनक प्रभाव देख किछु भाजपाइ सेहो अपन बाल बच्चाकेँ विद्यार्थी हैसियतसँ ऐ मुहिममे ढुकेलक। आब भीतरे भीतर छात्र - छात्राक बीच दू राजनीतिक दलक सिद्धांत सेहो पुनगैत नेतृत्व क्षमताक बले आने संस्था जेंका चन्दा बेहरी दिश उन्मुख होइत देखल गेल। कोनो संघ सोसायटी चलेबाक लेल तँ आर्थिक सहयोग चाहबे करी। एहूमे किछु छात्र प्रवीण भ' गेला जे सार्वजनिक हित लेल चंदा चुटकी करैत अपन निजी लाभ बेशी कमेलनि। सबसँ पैघ उपलब्धि भेलैक जे पुरना जिल्दसँ अलख जगेबाक तथाकथित धन बटोरबाक काज ओरिया गेलनि। एहि प्रसादे निजी प्रसिद्ध आ नीक कन्वेन्ट स्कूल बिहारमे चलैत रहलैन अछि। मुदा ई सब अप्रत्यक्ष काज सुकार्यमे तखन आबि गेल जखन बड़का-बड़काके काजकेँ मिथिला स्टूडेंट्स यूनियन अपना हाथमे लेलक। दि० २१-८-२०२२ केँ पछिला साल संसद मार्गमे जन्तर मन्तरमे एक दिवसीय महाधरणाक कार्यक्रम सफलता पूर्वक सम्पन्न कयल। एहन तरहक " पृथक मिथिला राज्य निर्माण" लेल आइ धरि कोनो नव - पुरान समिति आयोजन नहि क' सकल छलैक। परोक्ष रूपेँ एहि गैर राजनीतिक संगठन केर नेतृत्वकर्ता गणमेसँ सक्रिय भाजपानुमा नेता बनय लेल तरे- तर जोर अजमाइश कय रहलैक अछि, से २०२४ केर लोकसभा आ ०२५ क' विधानसभा चुनावमे आगू देखमे आओत। मिथिला स्टूडेंट यूनियन केर समस्त टीम केँ हार्दिक शुभकामना आ बधाय दैत छीयैन जे मिथिलाक समस्याक समाधान लेल तैयार छथि। भावी पीढी छात्रक भाय आ परिजनके छियैन,ताहीमे सहायक होय लेल एहि तरहक संस्थाक उपयोगिता सराहनीय कहाओल जायत।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१२.आशीष अनचिन्हार- MSU केर काज एवं हमर अपेक्षा

आशीष अनचिन्हार-संपर्क-8876162759

MSU केर काज एवं हमर अपेक्षा

विदेह बर्ख जनवरी २००८सँ प्रकाशित होइत अछि आ एहिठाम हरेक लेखक अपन वर्तनी, भाषा, टोनमे रचना लीखि पठाबैत छथि। आ अही कारणसँ विदेह हरेक वर्गमे पहुँचल अछि। विदेहक १५० अंक १५ मार्च २०१४ (पत्रिका लिंक) मे हमर एकटा आलेख छपल छल "तीन टा बिंदु" (फेसबुक लिंक) जाहिमे हम भाषाक मनोविज्ञानक सहारे ई साबित केने रही जे मिथिला-मैथिलीकेँ तोड़बामे पुरस्कारक की भूमिका छै ताहि हिसाबसँ ई मैथिलीमे पहिल प्रयास छलै। एहिसँ पहिने कोनो लेखक-विचारक एहन तथ्य उजागर नहि केने छलाह। बादमे पता चलल जे राजद केर नेता मनोज झाजी २०१८ मे अही बातकेँ उठेलाह तँ खुशी भेल हमरा जे कतहुँ ने कतहुँ हमर विचार जिंदा छै। ईहो खुशी भेल जे भने लोक क्रेडिट नहि दिअए मुदा सही विचार पसरिते छै। आब तँ ईहो देखि रहल छी जे विगत किछु बर्खसँ विदेहक विरोधी लोकनि सभ सेहो यत्र-कुत्र लीखि रहल छथि जे पुरस्कारक कारणे मिथिला-मैथिली टूटल।

MSU एकटा छात्र संगठन अछि जकर स्थापना मार्च २०१५ मे भेलै मुदा

उपरक बात केर कोन संबंध छै MSU सँ? आ ई संबंध जनबाक लेल MSU केर काज ओकर तौर-तरीका जानए पड़त से हम निच्चा दऽ रहल छी-

१) एल एन.एम.यू. मे नियमित शैक्षणिक सत्र लेल आगू बढ़ब- बिहारक हरेक विश्वविद्यालय केर सत्र गड़बड़ रहैत छै जाहि कारणसँ छात्रक उम्र, पाइ आदिक नाश होइत छै। MSU मिथिला विश्वविद्यालयक सत्र ठीक करबाक लेल आगू बढ़ल आ वर्तमानमे सत्र पहिनेसँ बेसी नियमित अछि।

२) दरभंगा एयरपोर्टसँ हवाइ सेवा लेल आगू बढ़ब- दरभंगामे एयरपोर्ट जनता लेल हो से बात बहुत पहिनेसँ छलै मुदा ओ मात्र भाषण धरि छलै। MSU एहि मुद्दापर आन्दोलन केलक आ ताही बले जनता लेल एयरपोर्ट सेवा २०२० मे शुरू भेल। ओना ई कहब आसान छै जे सरकार केलकै। मुदा प्रश्न तँ ई छै जे सरकार एतेक बर्खसँ की कऽ रहल छलै। अस्तु ई क्रेडिट MSU केर खातामे अछि।

३) मखान केर जी०आई० टैगिंग 'मिथिला मखान'क नामपर- बिहार सरकार "बिहार मखाना" केर नामसँ जी.आइ टैगिंग करबाक प्रस्ताव देने छल। MSU एहि मुद्दापर आन्दोलन केलक आ वर्तमानने ई "मिथिला मखाना" केर नामसँ देल गेलै।

४) मिथिलाक मूलभूत समस्या-आवश्यकतापर चरणबद्ध आंदोलन :- चिन्नी मिल आंदोलन, पेपर मिल आंदोलन, तमाम बंद पड़ल उद्योग धंधाकेँ चालू करब। मिथिला विकास बोर्ड लेल आंदोलन लेल एखनो ई संस्था आन्दोलन कऽ रहल अछि।

उपरक किछु प्रमुख काजक संगे हरेक दिन किछु ने किछु ई संस्था करिते रहैत

अछि जाहि कारणसँ जनताक नजरिमे भरोसा एलैए आ सत्ता सेहो एकर आन्दलोनकेँ गंभीरतासँ लैए। ई काज जे उपरमे देलहुँ जे कोना भेलै? ई की एक क्षेत्रक लोकक काज छै वा कि एक भाषाक काज छै वा कि एक जातिक काज छै। अहाँ जखन MSU केर संरचनापर धेआन देबै तँ लागत जे कम्मे स्पीडमे सही एकर संगठनमे हरेक जातिक लोक आबि रहल छै आ तँइ हरेक भाषा ओ क्षेत्र सेहो छै। आ इएह चीज एकरा विदेहसँ संबंधित करैत छै। आ तँइ MSU केर विशेषांक रहितो पहिने हम विदेहक चर्चा केलहुँ।

ई तँ छल MSU केर काज आब हमरा सभकेँ MSU सँ जे अपेक्षा अछि से दऽ रहल छी-

१) भाषा संबंधी अपेक्षा- MSU पर ई आरोप छै जे ओ मैथिली भाषाक स्थानपर ओ बेसी हिंदीक प्रयोग करैए। हमरा एहि आरोपमे दम नै बुझाइत अछि कारण ई आरोप लगेनिहार सभ अपने साहित्यमे मैथिली-हिंदीमे लिखै छथि अथवा दू भाषामे लिखए बला संग संबंध राखै छथि जाहिसँ हुनका मंच-पुरस्कार भेटैत रहनि। ओना MSU सँ हमर अपेक्षा अछि जे ओ हरेक जिलाक भाषायी टोन सीखए, ओकर शब्दावली सीखए आ ओहि जिला बला सभकेँ भरोसा दैए जे इएह मैथिली छै। एहिसँ भाषाक विस्तार तँ हेबे करतै संगे-संग आन राजनैतिक समस्याक समाधान ज्लदी हेतै।

२) अकादमी आ पुरस्कार संबंधी अपेक्षा- जेना कि हम अपन आलेखमे लिखने छी जे कोना अकादमी मिथिलाकेँ खंडित केलकै। तँ मिथिलाक एकीकरण लेल दुइए टा रस्ता छै या तँ अकादमी केर पूरा लोप कऽ देल जाए अथवा मिथिलाक उपेक्षित जिला सभमे लगभग १०० बर्ख धरि पुरस्कार देल जाए (दरभंगा-मधुबनी समेत आन प्रमुख जिलाकेँ एहि १०० बर्खमे कोनो अकादमी पुरस्कार नहि देल जाए)। जा धरि एहन नै हेतै ता धरि MSU वा कि आनो संगठन आबि जेतै मुदा मिथिलाक एकीकरण नै हेतै। हमर

सुझाव MSU अकादमी प्रसंगपर मंथन कऽ ओकरा बंद करबाए।

३) MSU अपन कार्यक्रममे न्यून्तम शिक्षा, व्यस्क शिक्षा एवं स्वरोजगारकेँ सभसँ उपर राखए।

जँ MSU एहि तीन अपेक्षापर काज कऽ लेलक तँ मिथिला-मैथिली-मैथिलक जे समस्या छै से लगभग ८०-९० प्रतिशत खत्म भऽ जेतै। आ उम्मेद अछि जे ई सभ कहियो ने कहियो हेबे करतै।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१३.प्रवीण कुमार झा- जनहित परिप्रेक्ष्य मे

प्रवीण कुमार झा

जनहित परिप्रेक्ष्य मे

प्रिय मैथिल, रोजी-रोटी आ रोजगार के तलाश में हम मैथिल दिल्ली मुंबई सन शहर में अपन घर स हजारों किलोमीटर दूर दोसर दर्जा के जीवन जीबय लेल मजबूर छी आ पैसा कमाय में लागल छी, आइ पलायन के अभिशाप हर... particle of Mithila.स्थिति ई अछि जे हमर गाम के 95% युवा गाम छोड़ि शहर में पलायन क गेल छथि, एकर पाछु मुख्य कारण अछि मिथिला में पूर्ण रोजगार, समुचित शैक्षणिक व्यवस्था आ समृद्ध स्वास्थ्य व्यवस्था के घोर अभाव।

मिथिला दशकों स राजनीतिक रूप स उपेक्षित रहल अछि, एहि स पूर्व कोनो पार्टी मिथिला क हित कए प्राथमिकता नहि देलक आ एकर कायाकल्प लेल जरूरी लागू नहि केलक, जाहि कारण स देश क अन्य भाग विकास क धारा मे आगू बढ़ैत रहल, जखन कि... उल्टा मिथिलाक समृद्धि घटैत गेल।

समस्त मिथिलाक कागज मिल, चीनी मिल, जूट मिल, कपास मिल जेना दर्जनों बंद उद्योग एकर जीवंत उदाहरण अछि, ई सब ओ उद्योग अछि जाहि माध्यमे एक समय मे पूरा मिथिला पनपैत छल आ एहि ठामक लोक किसान

आओर समृद्ध भ रहल छल . समय के साथ राजनीतिक उपेक्षा के कारण सब उद्योग बंद भ गेल, जखन अन्य क्षेत्र में नव उद्योग के स्थापना भ रहल छल, ओहि समय मिथिला औद्योगिक विफलता के तरफ बढ़ि रहल छल आ आइयो स्थिति ओहिना अछि |

एहन स्थिति मे ई सोचबाक आवश्यकता अछि जे देशक राजधानी आ सत्ताक केंद्र बिंदु दिल्ली सन शहर मे ई नहि भ' सकैत अछि, जतय 30-35 लाख प्रवासी मैथिल छथि, जाहि मे दिल्ली में सेहो 20- 25 हजार लोक जमा भ जाइत छथि, के नॉर्थ साउथ ब्लॉक में पावर कॉरिडोर स पूछू, हमर इलाका के अधिकार कतय अछि, हमर मिथिला के अधिकार कतय अछि ।

2015 स मिथिला स्टूडेंट यूनियन नामक संस्था के स्थापना भेल जे क्षेत्र आ छात्र के बात करय लेल ई एहन सेना बनि गेल अछि शिक्षित युवा के, जे हाल के समय में एक-एक समस्या के प्रमुखता स उठाबैत आबि रहल अछि आ एहन तरहक विभिन्न सफलता सेहो प्राप्त भेल अछि | .ओना त हम सब सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जेना ट्विटर, व्हाट्सएप, मैसेंजर, फेसबुक, टेलीग्राम, इंस्टाग्राम, आदि पर सक्रिय छी मुदा जरूरत अछि।
कि हमरा सब कं संगठन के हित मं, संगठनात्मक गतिविधि, संगठनात्मक विचार के प्रसार लेल ई मंचऽ के अधिकतम उपयोग करना चाहियऽ, हमरा ई काम करना चाहियऽ ताकि हम्मं अपनऽ विचारधारा, दृष्टि, मिशन आरू एजेंडा पं स्मार्ट तरीका सं काम करी सकियै ।
-प्रवीण कुमार झा, जिला प्रधान महासचिव, मिथिला स्टूडेंट यूनियन दरभंगा संग संस्थापक सदस्य:- मिथिलावादी पार्टी, praveenjhakeoti1997@gmail.com, 8507875442

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३. विदेह ३७२ म अंक १५ जून २०२३ (वर्ष १६ मास १८६ अंक ३७२) अंक ३७१ पर टिप्पणी

मनोज ठाकुर

मिथिला मैथिल जोड़बाक मे आहाक बहुत नीक पहल, धन्यबाद। एक विशेषांक मिथिलाक देवी देवताक महत्व आ आजुक समय मे ओकर स्थान पर आधारित होबक चाही एहन अपेक्षा अहि।

कल्पना झा

प्रथमदृष्टया नीक विषय वस्तु सँ युक्त अंक लागि रहल अछि। सार्थक पहल अछि विदेहक विशेषांक सभ।

लक्ष्मण झा 'सागर'

बहुत नीक आलेख सब जुटाय लेने छी। एतेक व्यस्त जीवन मे मैथिली साहित्यक प्रति एहेन रुचि आ एते बरका बरका काज हाथ मे ल के तकरा सही समय मे सम्पादित कय लैत छी से अहाँ आ अहाँक टीम सं संभव भ रहल अछि। अहाँक जज्वा आ जुनुंन के हम सलाम करैत छी! बधाइ!!

प्रियंका मिश्र

सहृदय धन्यवाद! 'विदेह'क माध्यमसँ बहुत किछु सिखबाक, बुझबाक अवसरि संग हमरा सभकेँ मार्गदर्शन सेहो होएत। हमर सभक प्रयास रहत जे अपनामे निरंतर सुधारक संग काज करबाक प्रयास करी।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**